अध्याय III

वाणिज्यिक बैंकों का परिचालन और कार्य निष्पादन

3.1 2005-06 के दौरान अनुकूल समष्टि आर्थिक दशाओं ने कारोबार और अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों [1] के वित्तीय निष्पादन को सुदृढ़ बनाए रखा। वर्ष के दौरान अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के परिचालन की महत्वपूर्ण बात लगातार दूसरे वर्ष बैंक ऋण का व्यापक विस्तार था। तथापि, फुटकर क्षेत्र, खास तौर से, आवास और वाणिज्यिक भूमि-भवन के लिए ऋण विस्तार के बावजूद ऋण-वृद्धि व्यापक थी। देयता के पक्ष में, पिछले वर्ष की तुलना में जमाराशियों में उच्च दर से वृद्धि हुई। तथापि, जमाराशियों का विस्तार उच्च ऋण वृद्धि के साथ-साथ नहीं चल सका, जिससे बैंकों को अपनी सरकारी प्रतिभूतियों की धारिताओं को चलनिधि में बदलने के लिए विवश होना पड़ा। पिछले वर्ष के रुझान के विपरीत, एक समूह के रूप में अनुसूचित वाणिज्यिक बेंकों के निवल लाभ बढ़े। एक बड़ी सीमा तक, इसमें ऋण की मात्रा में सुदृढ़ वृद्धि के कारण शुद्ध ब्याज आय में तेज बढ़ोत्तरी से सुगमता आई। 2005-06 के दौरान अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में सुधार आया जैसा कि लगातार तीसरे वर्ष सकल अनर्जक आस्तियों में पूर्णतया गिरावट में परिलक्षित हुआ। बाजार जोखिम के लिए पूँजी प्रभार लगाने तथा जोखिम भारित आस्तियों में तेज वृद्धि के बावजूद बैंक का पूंजी-जोखिम भारित आस्तियों का अनुपात न्यूनाधिक रूप से पिछले वर्ष के स्तर पर बना रहा।

3.2 इस अध्याय में सकल और बैंक समूह स्तर पर अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के परिचालन और वित्तीय निष्पादन की रूपरेखा दी गई है।यह अध्याय आठ खंड़ों में विभाजित किया गया है। खंड 2 में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के तुलन पत्र का सकल आधार पर विश्लेषण किया गया है, जबकि खंड 3 में तुलन-पत्र से इतर परिचालनों का चित्रण किया गया है। खंड 4 में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के वित्तीय निष्पादन का विश्लेषण किया गया है। खंड 5 में सुदृढ़ता संकेतकों के निष्पादन की रूपरेखा दी गई है। अध्याय 6 में पूंजी बाजार में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के परिचालन संबंधी कार्यों के ब्यौरे दिए गए हैं। और खंड 7 में वर्ष के दौरान बैंकों में तकनीकी प्रगति को शामिल किया गया है। खंड 8 में बैंकों का क्षेत्रीय विभाजन दिया गया है। खंड 9 में ग्राहक सेवा और वित्तीय समावेशन का अद्यतन स्वरूप प्रस्तुत किया गया है। अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के अलावा, 133 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक [2] तथा चार स्थानीय क्षेत्र बैंक हैं। जबकि इस अध्याय में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का निष्पादन मुख्य रूप से दिया गया है, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों और स्थानीय क्षेत्र बैंकों के निष्पादन का ब्यौरा अलग से क्रमशः खंड 10 और खंड 11 में दिया गया है।

2. अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की देयताएं और आस्तियां

3.3 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का कुल तुलन-पत्र 2004-05 के 19.3 प्रतिशत की अपेक्षा 2005-06 के दौरान 18.4 प्रतिशत बढ़ा, जिसमें गैर-बैंकिंग कंपनी से बैंकिंग कंपनी में परिवर्तन का प्रभाव शामिल था (सारणी III-1)। अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की संख्या दो देशी बैंकों और एक विदेशी बैंक के विलय तथा एक विदेशी बैंक बंद होने के कारण मार्च 2005 के अंत तक 88 से घटकर मार्च 2006 के अंत तक 84 रह गई (बाक्स III.1) । वर्तमान मूल्यों पर और कारक लागत पर सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की आस्तियों का अनुपात मार्च 2005 के अंत के 82.8 प्रतिशत से तुलना करने पर मार्च 2006 के अंत में 86.9 प्रतिशत बढ़ा, जिससे वास्तविक अर्थव्यवस्था की बैंकिंग प्रणाली में तेज वृद्धि का पता चलता है। बैंकिंग प्रणाली में हुई वृद्धि/उछाल की मात्रा, जैसा कि इक्विटी गुणज (कुल आस्तियों को कुल इक्विटी में विभाजित करके) से परिलक्षित होता है, तथापि, पिछले वर्ष के 15.7 प्रतिशत के स्तर पर अपरिवर्तित रहा।

3.4 2005-06 के दौरान अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के बड़े-बड़े तुलन पत्र संकेतकों का व्यवहार न्यूनाधिक रूप से पिछले वर्ष की तरह रहा। सामान्य रूप में सुदृढ़ आर्थिक वृद्धि और विशेष रूप से औद्योगिक वृद्धि द्वारा समर्थित, ऋण और अग्रिम में 2005-06 के दौरान 31.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि पिछले वर्ष इसमें 33.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। ऋण और अग्रिम में विस्तार के लिए धन की व्यवस्था मुख्य रूप से जमाराशियों में वृद्धि से प्राप्त निधि ,(पिछले वर्ष के 16.6 प्रतिशत की तुलना में 2005-06 में 17.8 प्रतिशत), प्रतिधारित आय में उल्लेखनीय वृद्धि, अधिक उधार लेकर और सरकारी तथा अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों को बेचकर की गई (सारणी III.2)। 2005-06 के दौरान ऋण में वृद्धि, प्रतिशत और मात्रा दोनों दृष्टियों से, जमाराशियों से अधिक रही। 2005-06 का वर्ष लगातार ऐसा

[1] अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों में 28 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (भारतीय स्टेट बैंक तथा 7 इसके सहयोगी बैंक; 19 राष्ट्रीयकृत बैंक और आइडीबीआइ बैंक लि.), 8 नए निजी क्षेत्र के बैंक, 19 पुराने निजी क्षेत्र के बैंक तथा 29 विदेशी बैंक शामिल हैं। गणेश बैंक ऑफ कुरुंदवाद लिमिटेड ,जिसके कार्यों पर 7 जुलाई 2006 को रोक लगाई गई और बाद में जिसका 2 सितंबर 2006 को फेडरल बैंक लिमिटेड में विलय किया गया, ने वर्ष 2005-06 से संबंधित अपने वार्षिक लेखों को प्रकाशित नहीं किया ।

[2] मार्चांत 2006 के अनुसार

सारणी III.1: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के समेकित तुलनपत्र

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	मार्च के अंत में			
	2005		2006	
	राशि	कुल का प्रतिशत	राशि	कुल का प्रतिशत
1	2	3	4	5
देयताएं				
1. पूंजी	25,904	1.1	25,203	0.9
2. प्रारक्षित निधियां और अधिशेष	1,23,704	5.3	1,57,909	5.7
3. जमाराशियां	18,37,557	78.0	21,64,477	77.6
3.1. मांग जमाराशि	2,34,528	10.0	2,92,932	10.5
3.2. बचत बैंक जमाराशि	4,44,831	18.9	5,42,830	19.5
3.3. मीयादी जमाराशि	11,58,197	49.2	13,28,714	47.7
4. उधार राशियां	1,68,086	7.1	2,05,433	7.4
5. अन्य देयताएं और प्रावधान	2,00,701	8.5	2,34,866	8.4
कुल देयताएं/आस्तियां	**23,55,955**	**100.0**	**27,87,891**	**100.0**
आस्तियां				
1. भारिबैंक के पास नकद और शेष राशि	1,18,075	5.0	1,44,461	5.2
2. बैंकों के पास शेष राशि और मांग और अल्पावधि सूचना पर जमाराशियां	95,356	4.0	1,16,396	4.2
3. निवेश	8,69,737	36.9	8,67,790	31.1
3.1 सरकारी प्रतिभूतियों में (क+ख)	6,98,789	29.7	6,91,946	24.8
क. भारत में	6,95,426	29.5	6,87,989	24.7
ख. विदेश में	3,363	0.1	3,957	0.1
3.2 अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में	16,291	0.7	13,948	0.5
3.3 गैर अनुमोदित प्रतिभूतियों में	1,54,656	6.6	1,61,895	5.8
4. ऋण और अग्रिम	11,50,836	48.8	15,16,557	54.4
4.1 खरीदे और भुनाए गए बिल	91,902	3.9	1,03,648	3.7
4.2 नकदी ऋण और ओवरड्राफ्ट *आदि*	4,37,018	18.5	5,68,965	20.4
4.3 मीयादी ऋण	6,21,914	26.4	8,43,942	30.3
5. अचल आस्तियां	23,050	1.0	25,058	0.9
6. अन्य आस्तियां	98,898	4.2	1,17,627	4.2

टिप्पणी : 2004-05 के बैंकों के आंकड़े 2005-06 के बैंकों के तुलनपत्र के अनुसार हैं और चूंकि कुछ बैंकों द्वारा आंकड़े संशोधित किए गए हैं, भारत में बैंकिंग की प्रवृत्ति एवं प्रगति संबंधी रिपोर्ट 2004-05 में प्रस्तुत आंकड़ों से नहीं मिलते हैं।

स्रोत : संबंधित बैंकों के तुलनपत्र

दूसरा वर्ष था जब समग्र रूप में ऋण में वृद्धि कुल जमाराशियों में समग्र वृद्धि से अधिक थी। निवेशों में वृद्धि, जिसमें 2004-05 के दौरान कुछ कमी हुई थी, 2005-06 के दौरान ऋणात्मक हो गई क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और पुराने निजी क्षेत्र के बैंकों ने ऋण की अधिक मांग को पूरा करने के लिए सरकारी प्रतिभूतियों को बेचा [परिशिष्ट सारणी III.1(क) से (ग)]।

बॉक्स III.1: वाणिज्यक बैंकिंग क्षेत्र में समामेलन

2005-06 के दौरान ,दो देशी बैंकों और एक विदेशी बैंक का समामेलन हुआ और एक विदेशी बैंक बंद होने से मार्च 2005 के अंत तक अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की संख्या घटकर 88 रह गई।रिज़र्व बैंक की सिफारिशों पर भारत सरकार ने गणेश बैंक ऑफ कुरुंदवाड लि.पर बैंककारी विनियमन (बी. आर.) अधिनियम,1949 की धारा 45 के अंतर्गत 7 जनवरी 2006 से 3 महीनों की अवधि के लिए रोक लगा दी है क्योंकि बैंक की निवल मालियत ऋणात्मक हो गई और वह कई वर्षों तक अपनी पूंजी बढ़ाने में असफल रहा।रिज़र्व बैंक ने उक्त बैंक का फेडरल बैंक लि. के साथ समामेलन करने की योजना तैयार की, जिसे सरकार द्वारा 24 जनवरी 2006 को स्वीकृति प्रदान की गई।तथापि, प्रस्तावित समामेलन को गणेश बैंक ऑफ कुरुंदवाड लि. और अन्यों ने मुंबई उच्च न्यायालय के समक्ष चुनौती दी है।सर्वोच्च न्यायालय के 28 अगस्त 2006 के आदेश के अनुसरण में बैंक द्वारा दायर याचिका को खारिज करते हुए केंद्र सरकार ने 2 सितंबर 2006 से विलय को प्रभावी बनाने के लिए अधिसूचना 1 सितंबर 2006 को जारी की।बैंक ऑफ पंजाब लि. के सेंचुरियन बैंक लि. के साथ स्वैच्छिक समामेलन को रिज़र्व बैंक ने बैंककारी अधिनियम की धारा 44 क के अंतर्गत अनुमोदन दिया है और उसे 1 अक्तूबर 2005 से लागू किया गया है।बाद में सेंचुरियन बैंक ने अपना नाम बदलकर सेंचुरियन बैंक ऑफ पंजाब लि. रखा।विदेशी बैंकों में जबकि आइएनजी बैंक एनवी ने भारत में अपना कारोबार बंद कर दिया, यूएफजे बैंक लि. ने अपने बैंकिंग कारोबार को वैश्विक स्तर पर बैंक ऑफ टोक्यो- मित्सूबिशी लि. में विलीन किया।परिणामस्वरूप आइएनजी बैंक एनवी और यूएफजे बैंक लि.को क्रमश: 28 अक्तूबर 2005 और 1 जनवरी 2006 से भारतीय रिज़र्व बैंक ,1934 की दूसरी अनुसूची से निकाल दिया गया (ब्यौरों के लिए खंड III.8 देखें)।

2005-06 में हुए देशी बैंकों के दो समामेलनों के अलावा 2006-07 में(31 अक्तूबर 2006 तक) एक अन्य समामेलन हुआ।युनाइटेड वेस्टर्न बैंक लि.पर बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 45 की उपधारा (2) के अधीन केंद्र सरकार ने 2 सितंबर 2006 से तीन महीने की अवधि के लिए रोक लगा दी क्योंकि युनाइटेड वेस्टर्न बैंक का जोखिम भारित आस्तियों की तुलना में पूंजी का अनुपात ऋणात्मक हो गया ।अधिस्थगन अवधि के दौरान 17 कंपनियों ने रिज़र्व बैंक के पास उक्त बैंक के विलय की इच्छा जाहिर की।बाद में सरकार ने युनाइटेड वेस्टर्न बैंक लि.के भारतीय औद्योगिक विकास बैंक लि.के साथ समामेलन की योजना को अधिसूचित किया जो 3 अक्तूबर 2006 से लागू हुई।

सारणी III.2: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के तुलनपत्र में वृद्धि : बैंक समूह-वार

(प्रतिशत)

मद	मार्च के अंत में									
	2005					2006				
	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	निजी क्षेत्र के पुराने बैंक	निजी क्षेत्र के नए बैंक	विदेशी बैंक	सभी अनु-वाणिज्य बैंक	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	निजी क्षेत्र के पुराने बैंक	निजी क्षेत्र के नए बैंक	विदेशी बैंक	सभी अनु-वाणिज्य बैंक
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1. पूंजी	5.8	27.8	7.9	51.0	16.0	-20.6	25.6	14.2	27.5	-2.7
2. प्रारक्षित और अधिशेष	30.7	8.9	56.4	17.3	31.2	21.7	19.4	55.2	28.2	27.7
3. जमाराशियां	17.0	10.8	21.1	7.7	16.6	12.9	11.4	50.7	31.7	17.8
3.1. मांग जमाराशियां	15.6	19.2	10.6	19.4	15.4	20.8	15.6	29.3	48.8	24.9
3.2. बचत बैंक जमाराशियां	18.0	17.8	32.7	23.4	19.0	19.0	20.2	60.6	21.1	22.0
3.3. मीयादी जमाराशियां	16.9	8.2	21.6	-2.1	15.9	8.9	8.8	53.9	25.4	14.7
4. उधार	207.0	0.9	10.4	23.7	76.2	24.3	22.5	11.0	30.2	22.0
5. अन्य देयताएं और प्रावधान	7.9	10.2	6.5	6.7	7.5	11.9	13.7	34.0	34.3	17.4
कुल देयताएं / आस्तियां	**20.6**	**10.6**	**19.4**	**12.7**	**19.3**	**13.6**	**12.2**	**43.2**	**31.2**	**18.4**
1. भारिबैंक के पास नकदी और शेष राशि	6.8	13.0	-7.9	-7.1	4.3	25.3	-0.4	16.1	20.0	22.3
2. बैंकों के पास शेष राशि तथा मांग और अल्पावधि सूचना पर मुद्रा	13.9	29.2	22.1	18.1	16.4	14.0	7.3	37.5	64.0	22.1
3. निवेश	9.5	-6.0	8.1	3.1	8.1	-7.6	0.9	41.1	25.0	-0.2
3.1 सरकारी प्रतिभूतियों में (क + ख)	11.3	-1.4	2.3	4.3	9.4	-8.3	3.0	50.4	23.6	-1.0
क. भारत में	11.3	-1.4	2.3	4.3	9.4	-8.5	3.0	50.2	23.6	-1.1
ख. विदेश में	16.9	-9.3	184.3	0.0	16.9	15.3	2.6	255.2	0.0	17.7
3.2 अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में	-11.8	-24.4	-8.8	25.0	-11.9	-13.5	-14.7	-60.9	-60.6	-14.4
3.3 गैर अनुमोदित प्रतिभूतियों में	3.9	-18.7	20.9	-1.9	5.0	-3.0	-5.7	24.1	32.8	4.7
4. ऋण और अग्रिम	34.9	22.7	33.0	24.5	33.2	29.5	21.5	50.2	29.5	31.8
4.1 खरीद गए तथा भुनाए गए बिल	35.6	8.1	53.0	16.4	34.0	16.4	8.3	-10.4	27.0	12.8
4.2 नकदी ऋण, ओवरड्राफ्ट *आदि*	16.3	18.0	35.4	14.8	17.3	28.5	21.3	64.2	29.1	30.2
4.3 मीयादी ऋण	54.5	30.7	30.3	35.9	47.0	32.2	24.1	54.4	30.4	35.7
5. नियत आस्तियां	16.6	4.4	-4.2	-3.4	7.7	9.1	6.8	2.5	27.8	8.7
6. अन्य आस्तियां	10.9	8.1	18.6	0.5	10.1	12.8	13.6	31.3	37.8	19.5

स्रोत : संबंधित बैंकों का तुलनपत्र

3.5 बैंक समूहवार, 2005-06 के दौरान नए निजी क्षेत्र के बैंकों की वृद्धि दर (43.2 प्रतिशत) सर्वाधिक थी, इसके पश्चात विदेशी बैंक (31.2 प्रतिशत), सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (13.6 प्रतिशत) और पुराने निजी क्षेत्र के बैंक (12.2 प्रतिशत) थे (सारणी III.2)। परिणामस्वरूप, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का सापेक्षिक महत्व उल्लेखनीय रूप से घटा क्योंकि अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की कुल संपत्ति में उनका हिस्सा मार्च 2005 के अंत के 75.3 प्रतिशत की अपेक्षा मार्च 2006 के अंत में 72.3 प्रतिशत हो गया, जबकि नए निजी क्षेत्र के बैंकों का हिस्सा 12.5 प्रतिशत से बढ़कर 15.1 प्रतिशत हो गया। इससे मुख्य रूप से देयता पक्ष में, जमाराशियों की प्रवृत्ति परिलक्षित होती हैं(सारणी III.3)।

सारणी III.3: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के तुलनपत्र के प्रमुख घटक-बैंक समूहवार

(मार्च के अंत में)

(प्रतिशत)

बैंक समूह	आस्तियाँ		जमाराशियाँ		अग्रिम		निवेश	
	2005	2006	2005	2006	2005	2006	2005	2006
1	2	3	4	5	6	7	8	9
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	75.3	72.3	78.2	75.0	74.2	72.9	78.9	73.1
राष्ट्रीयकृत बैंक	45.2	44.3	49.8	48.7	45.5	45.0	46.0	44.2
स्टेट बैंक समूह	26.6	24.8	27.5	25.1	24.7	24.5	30.0	25.9
अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	3.5	3.2	0.8	1.2	3.9	3.5	2.9	2.9
निजी क्षेत्र के बैंक	18.2	20.4	17.1	19.8	19.2	20.6	16.2	20.8
निजी क्षेत्र के पुराने बैंक	5.7	5.4	6.4	6.0	5.9	5.5	5.1	5.2
निजी क्षेत्र के नए बैंक	12.5	15.1	10.8	13.8	13.3	15.2	11.0	15.6
विदेशी बैंक	6.5	7.2	4.7	5.3	6.5	6.4	4.9	6.2
अनुसूचित वाणिज्य बैंक	**100.0**	**100.0**	**100.0**	**100.0**	**100.0**	**100.0**	**100.0**	**100.0**

स्रोत : संबंधित बैंकों के तुलनपत्र

3.6 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की जमाराशियां पिछले वर्ष के 16.6 प्रतिशत से तुलना करने पर 2005-06 के दौरान 17.8 प्रतिशत की उच्च दर से बढ़ीं। मांग जमाराशियां और बचत जमाराशियां पिछले वर्ष से तुलना करने पर 2005-06 के दौरान उल्लेखनीय रूप से अधिक दर से बढ़ीं। मीयादी जमाराशियों की वृद्धि दर, जो 2004-05 के दौरान कुछ ऊपर बढ़ी, 2005-06 के दौरान थोड़ी सी कम हुई, इससे मुख्य रूप से अन्य बचत लिखतों, खास तौर से डाकघर जमाओं, जीवन बीमा पालिसियों और पारस्परिक निधियों की यूनिटों से बढ़ती प्रतिस्पर्धा का पता लगता है। ऋण की बढ़ती मांग को पूरा करने हेतु पैसा उपलब्ध कराने के लिए अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा किए गए प्रयासों से बैंकिंग प्रणाली में जमाराशियों की परिपक्वता अवधि में पर्याप्त कमी की गई है। (बॉक्स III.2)।

3.7 2005-06 के दौरान जमा प्रमाण पत्रों का निर्गम तेजी से बढ़ा क्योंकि बैंकों ने ऋण की बढ़ी हुई मांग को पूरा करने के लिए धन उगाहने के प्रयास किए। बकाया जमा प्रमाणपत्रों की राशि मार्च 2005 के अंत के 12,078 करोड़ रुपए से बढ़कर मार्च 2006 के अंत में 43,568 करोड़

बॉक्स III.2: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की जमाराशियों का बदलता स्वरूप

अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की जमाराशियों को मांग और मीयादी जमाओं के रूप में वर्गीकृत किया गया है। मांग जमाओं में (i) चालू जमाराशियां; (ii) बचत बैंक जमाराशियों की मांग देयताओं के भाग; (iii) मांग पत्र / गारंटी पर रखे गये मार्जिन; (iv) अतिदेय सावधि जमाराशियों, नकदी प्रमाण पत्रों और संचयी / आवर्ती जमाराशियों के शेष; (v) बकाया तार अंतरण, डाक अंतरण और मांग ड्राफ्ट; (vi) दावा न की गई जमाराशियां; (vii) नकदी ऋण खाते में क्रेडिट शेष; (viii) सहभागिता प्रमाण पत्रों (पीसी) के मांग भाग; (ix) मांग पर देय अग्रिमों के लिए जमानत के रूप में रखी गई जमाराशियां शामिल हैं। दूसरी तरफ, सावधि जमाओं में (i) सावधि जमाराशियां; (ii) नकदी प्रमाण पत्र; (iii) संचयी और आवर्ती जमाराशियां; (iv) बचत बैंक जमाराशियों के मांग देयताओं के भाग; (v) स्टाफ जमानत जमाराशियां; (vi) यदि मांग पर देय नहीं है तो साख पत्र पर रखे गए मार्जिन; (vii) अग्रिमों के लिए जमानत के रूप में रखी गई सावधि जमाराशियां; (viii) सहभागिता प्रमाणपत्रों (पीसी) का मीयादी भाग शामिल है। मीयादी जमाराशियों को अल्पकालिक (ऐसी बचत जमाराशियों और मीयादी जमाराशियों के सावधि देयता भाग जिनकी संविदागत परिपक्वता एक वर्ष तक की है) तथा दीर्घकालिक जमाराशियों (ऐसी सावधि जमाराशियाँ जिनकी संविदागत परिपक्वता एक वर्ष से अधिक की है) में वर्गीकृत किया जा सकता है।

मांग जमाराशियों का हिस्सा मार्च 2001 के अंत में 14.7 प्रतिशत से बढ़कर मार्च 2006[3] के अंत में 17.0 प्रतिशत हो गया, जबकि इसी अवधि में मीयादी जमाराशियों का हिस्सा 85.2 प्रतिशत से घटकर 83.0 प्रतिशत रह गया। तथापि, सावधि जमाराशियों के घटक में और अधिक उल्लेखनीय परिवर्तन देखे गए। कुल मीयादी जमाराशियों में अल्पकालिक जमाराशियों का हिस्सा मार्च 2001 के अंत में 43.8 प्रतिशत से तेजी से बढ़कर मार्च 2006 के अंत में 58.2 प्रतिशत हो गया और दीर्घकालिक जमाराशियों के हिस्से में तदनुसार गिरावट आई (चार्ट 1)।

चार्ट 1: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की मीयादी जमाराशियों की संरचना

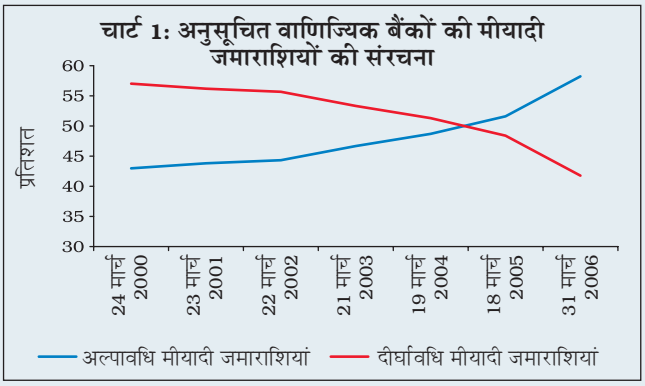

जून 2006 के अंतिम रिपोर्टिंग शुक्रवार को मीयादी जमाराशियों में अल्पकालिक जमाराशियों का हिस्सा विदेशी बैंकों (83.3 प्रतिशत) के मामले में सर्वाधिक था, इसके पश्चात नए निजी क्षेत्र के बैंक (80.6 प्रतिशत) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (54.3 प्रतिशत) और पुराने निजी क्षेत्र के बैंक (51.6 प्रतिशत) थे (चार्ट 2)।

चार्ट 2: मीयादी जमाराशियों की बैंक समूहवार संरचना (23 जून 2006 को समाप्त पखवाड़ा)

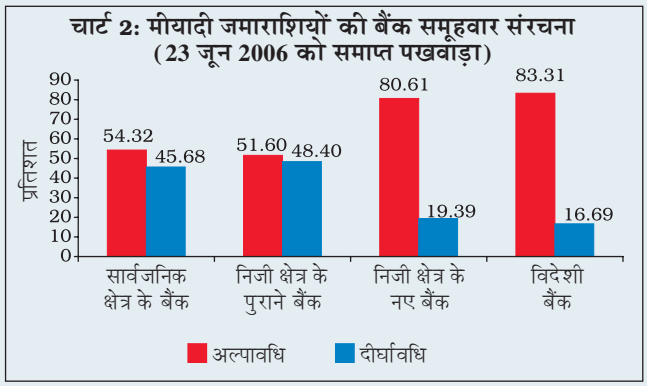

अल्पकालिक जमाराशियों के प्रति बढ़ती रुचि के लिए दीर्घकालिक जमाराशियों पर कम होती आय को कारण माना जा सकता है। यह अल्पकालिक और दीर्घकालिक जमाराशियों के बीच स्प्रेड (अंतर) से स्पष्ट है जो जून 2006 में थोड़ा बढ़ने के पश्चात मार्च 2005 के अंत के 100 आधार अंक से घटकर मार्च 2006 के अंत में 75 आधार अंक हो गया। अधिक आय के लिए निवेश अवसरों की प्रतीक्षा करते समय निवेशक कम आय के बावजूद कम स्प्रेड को देखते हुए अल्पकालिक जमाराशियों को पसंद करते हैं।

दूसरी तरफ, बैंक अल्पकालिक जमाराशियां पसंद करते हैं। कम लागतवाली अल्पकालिक ब्याज दरों के कारण बैंक कम लागत पर संसाधन जुटा सकते हैं। इससे बैंक प्रतियोगी परिवेश में विख्यात कारोबारी फर्मों को कम लागत पर उधार दे सकते हैं, जिससे उनके द्वारा ऋण संबंधी चूकों को रोका जा सका है। भारतीय संदर्भ में, यह पाया गया है कि विदेशी और निजी क्षेत्र के बैंकों के पास सापेक्षिक रूप से कम लागत की जमाओं का अधिक हिस्सा है। प्रसंगवश, इन बैंक समूहों का लाभ मार्जिन अधिक और एन पी ए स्तर भी अधिक है।

संदर्भ :

भारतीय रिज़र्व बैंक (1998) द्वारा प्रकाशित, मुद्रा आपूर्ति विश्लेषण और, समेकन पद्धति के संबंध में बनाए गए कार्य दल की रिपोर्ट (अध्यक्ष : वाय.वी. रेड्डी)।

[3] प्रस्तुत किए गए प्रतिशत भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 42 (2) के अन्तर्गत सूचित किए गए संबंधित माह और वर्ष के अंतिम रिपोर्टिंग शुक्रवार पर आधारित हैं।

रुपए तथा 63,864 करोड़ रुपए (15 सितंबर 2006) हो गई। बकाया जमाप्रमाण पत्र एक वर्ष पहले के 0.7 प्रतिशत से तुलना करने पर मार्च 2006 के अंत में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की कुल जमा राशियों के 2.0 प्रतिशत थे। निजी क्षेत्र के बैंक जमा प्रमाण पत्रों के बड़े निर्गमकर्ता थे, इसके पश्चात विदेशी बैंक। विशेष रूप से, सीमित शाखा तंत्र तथा सीमित फुटकर ग्राहकों के आधार वाले बैंकों ने जमा प्रमाणपत्रों के निर्गम का बहुत अधिक सहारा लिया है (परिशिष्ट सारणी III.2)।

3.8 दिसंबर 2005 में इंडिया मिलेनियम डिपॉजिट के शोधन (7.1 बिलियन अमरीकी डालर अथवा 31,959 करोड़ रुपए) के प्रभाव को दर्शाते हुए, बैंकों की अनिवासी विदेशी मुद्रा जमाराशियों में 2004-05 के दौरान हुई 1.1 प्रतिशत की थोड़ी वृद्धि की तुलना में 2005-06 के दौरान 22.2 प्रतिशत की गिरावट हुई।

3.9 बैंक समूह-वार नए निजी क्षेत्र के बैंकों की जमाराशियां सर्वाधिक दर (50.7 प्रतिशत) से बढ़ी, इसके पश्चात विदेशी बैंक (31.7 प्रतिशत), सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (12.9 प्रतिशत) और पुराने निजी क्षेत्र के बैंक (11.4 प्रतिशत) थे। कुल जमाओं में नए निजी क्षेत्र के बैंकों का हिस्सा धीरे- धीरे बढ़ रहा है जबकि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का हिस्सा वर्षों से घट रहा है (चार्ट III.1)।

जमा से इतर संसाधन

3.10 ऋण की अधिक मांग को पूरा करने और पूँजी आधार को मजबूत करने के लिए ग्यारह बैंकों ने 11,067 करोड़ रुपए जुटाने के लिए इक्विटी बाजार का सहारा लिया। बैंकों ने पिछले वर्ष 87 निर्गमों के द्वारा जुटाए गए 15,219 करोड़ रुपए से तुलना करने पर प्राइवेट प्लेसमेंट बाजार से भी 97 निर्गमों के माध्यम से 30,151 करोड़ रुपए जुटाए (ब्यौरे के लिए खंड 6 देखें)।

चार्ट III.1: कुल जमाराशियों में अंश - बैंक समूहवार

(मार्च के अंत में)

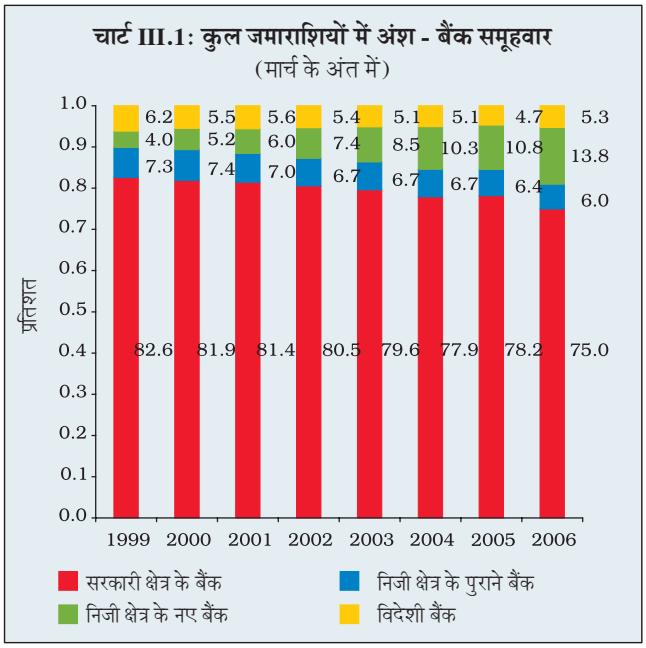

बैंकों की अन्तरराष्ट्रीय देयताएं

3.11 बैंकों की अन्तरराष्ट्रीय देयताएं 2004-05 की 15.5 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में 2005-06 के दौरान 20.2 प्रतिशत तेजी से बढ़ीं, जो मुख्य रूप से विदेशी मुद्रा उधारों, और एफसीएनआर (बी) जमाओं, एनआरई रुपया जमाओं, अनिवासियों द्वारा रखी गई बैंक की इक्विटीज़ और एडीआर / जीडीआर के निर्गमों में तेज वृद्धि के कारण थी (सारणी III.4)। पिछले कुछ वर्षों के रुझान को जारी रखते हुए, 2005-06 के दौरान विदेशी मुद्रा जमाराशियों की सापेक्षिक महत्ता और कम हुई जबकि विदेशी मुद्रा उधारों की महत्ता बढ़ी (चार्ट III.2)। अनिवासी भारतीयों द्वारा बैंकों की इक्विटी धारिता में आई तेज वृद्धि के परिणामस्वरूप ''अन्य देयताओं'' में उछाल आया। दिसंबर 2005 में इंडिया मिलेनियम डिपॉजिट के शोधन

सारणी III.4: बैंकों की अंतरराष्ट्रीय देयताएं – प्रकार

(राशि करोड़ रुपए में)

देयताएं प्रकार	मार्च के अंत में		
	2004	2005	2006
1	2	3	4
1. जमा राशियां और ऋण	1,78,994 (81.1)	2,03,154 (79.7)	2,46,246 (80.3)
जिनमें से:			
क) विदेशी मुद्रा अनिवासी बैंक [एफसीएनआर(बी)]	45,386 (20.6)	50,796 (19.9)	58,110 (19.0)
ख) विदेशी मुद्रा उधार*	33,598 (15.2)	45,539 (17.9)	63,722 (20.8)
ग) अनिवासी विदेशी रुपया (एनआरइ) खाता	75,938 (34.4)	85,811 (33.7)	1,00,310 (32.7)
घ) अनिवासी सामान्य रुपया (एनआरओ) जमाराशियां खाता	4,059 (1.8)	6,393 (2.5)	5,449 (1.8)
2. प्रतिभूति बांडों (आइएमडी/आर आइबी सहित) के अपने निर्गम	27,720 (12.6)	29,235 (11.5)	4,856 (1.6)
3. अन्य देयताएं	14,017	22,609	55,506
जिनमें से:	(6.4)	(8.9)	(18.1)
क) एडीआर/जीडीआर	6,396	9,910	14,835
	(2.9)	(3.9)	(4.8)
ख)अनिवासियों द्वारा धारित बैंकों की इक्विटी	1,379 (0.6)	3,230 (1.3)	28,438 (9.3)
ग) भारत स्थित विदेशी बैंकों की पूंजी/ अवर्गीकृत अंतरराष्ट्रीय देयताएं	6,242 (2.8)	9,469 (3.7)	12,233 (4.0)
कुल अंतरराष्ट्रीय देयताएं (1+2+3)	**2,20,730 (100.0)**	**2,54,999 (100.0)**	**3,06,609 (100.0)**

* : भारत में और विदेश से अंतर बैंक उधार, बैंकों के बाह्य वाणिज्यिक उधार।

टिप्पणी : कोष्ठकों के आंकड़े कुल का प्रतिशत हैं ।

स्रोत : स्थानीकृत बैंकिंग सांख्यिकी।

चार्ट III.2: अंतरराष्ट्रीय देयताओं में विदेशी मुद्रा जमा और उधार
(मार्च के अंत में)

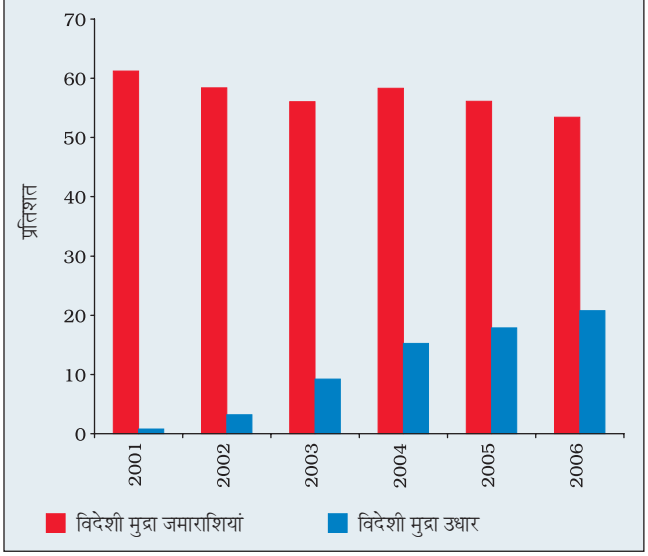

के कारण 2005-06 के दौरान ''प्रतिभूतियों/बांड़ों के अपने निर्गमों'' के हिस्से में अचानक कमी आई।

3.12 हाल के वर्षों में बैंकों के परिचालन में निधियों के बाह्य स्रोतों की महत्ता बढ़ती जा रही है, जिससे हाल के वर्षों में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र का अन्तरराष्ट्रीय पूँजी बाजार पर निर्भरता के साथ बढ़ते एकीकरण का पता चलता है। यह अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की कुल देयताओं में अन्तरराष्ट्रीय देयताओं के बढ़ते हिस्से से परिलक्षित होता है (चार्ट III.3)।

बैंक ऋण

3.13 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के ऋणों और अग्रिमों में 2005-06 के दौरान 31.8 प्रतिशत की अच्छी खासी मजबूत वृद्धि दिखी, जो 2004-05 में 33.2 प्रतिशत थी (बॉक्स III.3)। बैंक ऋण के बढ़े घटकों में, 2005-06 में खरीदे गए और बट्टा किए गए बिल पिछले वर्ष की तुलना में कम दर पर बढ़े, नकद ऋण और ओवरड्राफ्ट में भारी वृद्धि दिखी। सावधि ऋण, जो अग्रिमों के सबसे बड़े घटक हैं, वर्ष के दौरान तेजी से 35.7 प्रतिशत बढ़े, पिछले वर्षों में भी यही प्रवृत्ति देखी गई थी। परिणाम के रूप में, कुल ऋणों और सकल घरेलू पूँजी निर्माण में मीयादी ऋणों का हिस्सा हाल के वर्षों में बहुत ज्यादा बढ़ा है (चार्ट III.4)।

सकल बैंक ऋण का क्षेत्र- वार नियोजन

3.14 2005-06 के दौरान गैर खाद्य बैंक ऋण तेजी से बढ़ा। ऋण वृद्धि व्यापक थी। 2005-06 में सेवाओं के लिए ऋण (वैयक्तिक ऋण और अन्य सेवाओं को मिलाकर) 52.8 प्रतिशत बढ़ा, जो वृद्धिशील गैर-खाद्य सकल बैंक ऋण (एन एफ जी बी सी) का 58.3 प्रतिशत था। 2005-06 में वैयक्तिक ऋण मुख्य रूप से आवास ऋण के कारण तेजी से बढ़ा। वर्ष के दौरान भूमि -भवन ऋण दोगुने से अधिक हो गया (सारणी III.5; परिशिष्ट सारणी III.3)। अन्य वैयक्तिक ऋणों जैसे क्रेडिट कार्ड बकाया और शिक्षा ऋण में भी क्रमशः 59.3 प्रतिशत और 96.5 प्रतिशत की तेज वृद्धि दिखी।

चार्ट III.3: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की कुल देयताओं की तुलना में विदेशी मुद्रा देयताएं
(मार्च के अंत में)

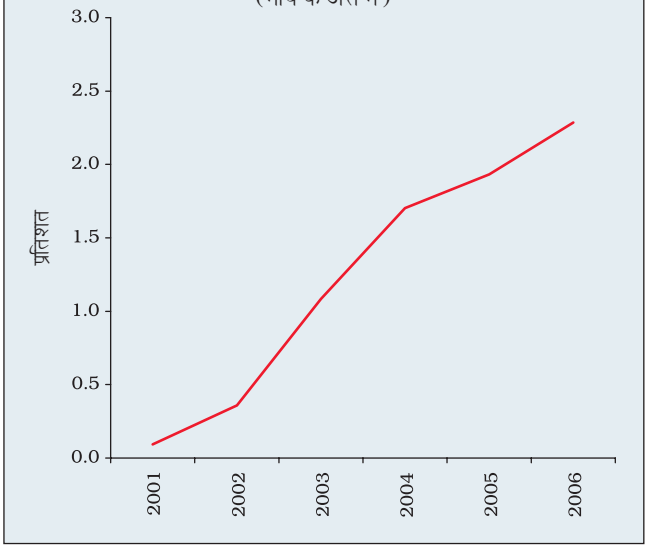

चार्ट III.4: मीयादी ऋण और पूंजी निर्माण

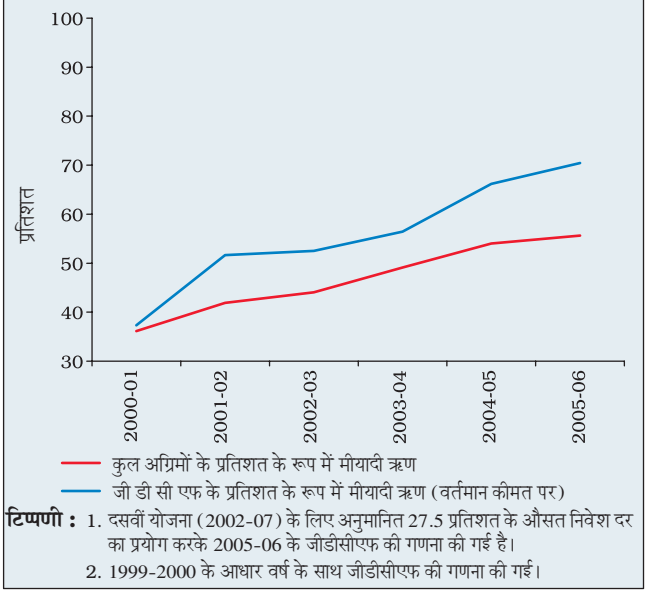

टिप्पणी : 1. दसवीं योजना (2002-07) के लिए अनुमानित 27.5 प्रतिशत के औसत निवेश दर का प्रयोग करके 2005-06 के जीडीसीएफ की गणना की गई है।
2. 1999-2000 के आधार वर्ष के साथ जीडीसीएफ की गणना की गई।

बाक्स III.3 : ऋण वृद्धि का विश्लेषण

हाल के वर्षों में अनेक उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं, खास तौर से एशिया और लैटिन अमरीका में बैंक उधार बढ़े हैं। वास्तविक अर्थों में अनेक अर्थव्यवस्थाओं में निजी क्षेत्र के दिए गए बैंक ऋण 2005 में 10 और 40 प्रतिशत के बीच दर से बढ़े हैं (बी आइ एस, 2006)। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में बैंक उधार (देने) में सुदृढ़ वृद्धि के लिए अनेक कारकों ने सहयोग दिया है, जैसे सुदृढ़ वृद्धि, बैंकिंग प्रणाली में चलनिधि की अधिकता जो आसान वैश्विक और घरेलू मौद्रिक दशाओं को दर्शाती है और बहुत बैंकों का पुनर्गठन। बैंक उधार (देने) में हाल की वृद्धि बैंकों के तुलन पत्र के आस्ति पक्ष में हुए महत्वपूर्ण परिवर्तनों से जुड़ी हुई है। पहले, कारोबार क्षेत्र के लिए ऋण, जो ऐतिहासिक तौर पर बैंकों की आस्तियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटक है - कमजोर और संकुचित हैं जबकि अनेक देशों में घरेलू क्षेत्र के हिस्से में तेजी से वृद्धि हुई है। दूसरे, सरकारी प्रतिभूतियों में बैंकों के निवेश में 2004-05 तक तेज वृद्धि हुई है। परिणामत:,वाणिज्यिक बैंकों का सरकारी प्रतिभूतियों के रूप में उनकी घरेलू आस्तियों का बहुत बड़ा हिस्सा रखना जारी रहा - यह प्रक्रिया लगता है कि 1990 के दशक के मध्य में शुरू हुई है।

वित्तीय वर्ष 2004-05 से भारत में बैंक ऋण में तेज वृद्धि हुई है। बैंक ऋण की वृद्धि दर, जो 2002-03 में 14.4 प्रतिशत की निचाई पर थी, 2004-05 में 30.0 प्रतिशत से अधिक बढ़ी, यह दर 2005-06 में बनाए रखी गई (चार्ट 1)। बैंक ऋण की दर वृद्धि के लिए अनेक कारकों को उत्तरदायी माना जा सकता है। एक, अर्थव्यवस्था का समष्टि आर्थिक निष्पादन बेहतर हुआ, साथ ही पिछले तीन वर्षों के दौरान जीडीपी वृद्धि दर 7.5 प्रतिशत और 8.5 प्रतिशत के बीच बनी रही। दूसरे, 2003-04 की दूसरी छमाही से सरकार की आय में आई कमी ने बैंकों को अपनी आस्ति पोर्टफोलियों को निवेश से अग्रिम में अंतरित करके पुन: समायोजित करने के लिए विवश किया।पिछले दो वर्षों में वाणिज्यिक बैंकों की कुल आस्तियों में सकल अग्रिमों का हिस्सा 45.0 प्रतिशत से बढ़कर 54.7 प्रतिशत हो गया लेकिन निवेश का हिस्सा 41.6 प्रतिशत से घटकर 32.1 प्रतिशत हो गया।

तथापि, ऋण वृद्धि बहु-आयामी रही है जिसने बैंकों की ऋण संकेद्रण जोखिम के प्रति असुरक्षितता को कम किया है। 2001-02 में बड़ी संख्या में छोटे खातों के विवेकपूर्ण तरीके से बट्टे खाते डालने और समझौता निपटान के कारण बैंक की ऋण बहियों में 2001-02 में प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के ऋणों में गिरावट आई जो बैंकों के आवास ऋण पोर्टफोलियों में उछाल के कारण 2002-03 से बदल गई (चार्ट2)।यद्यपि उद्योग और अन्य क्षेत्रों के लिए भी ऋण में तेजी आई, लेकिन कुल ऋण में उनका हिस्सा थोड़ा-सा घटा है।

फुटकर ऋण, जिसमें 2004-05 और 2005-06 में भी 40.0 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दिखी, हाल के वर्षों में ऋण वृद्धि को प्रमुख रूप से आगे बढ़ाने वाला रहा है। सकल अग्रिमों के प्रतिशत के रूप में फुटकर ऋण मार्च 2004 के 22.0 प्रतिशत से बढ़कर मार्च 2006 में 25.5 प्रतिशत हो गए (चार्ट 3)। फुटकर ऋण के घटकों में, आवास ऋण की वृद्धि 2004-05 में 50.0 प्रतिशत और 2005-06 में 34.0 प्रतिशत थी। वाणिज्यिक भूमि- भवन में बैंकों का निवेश संबंधी जोखिम पिछले वित्तीय वर्ष में दोगुने से भी अधिक हो गया।

कारोबारी वातावरण में सुधार के साथ-साथ अर्थव्यवस्था के चक्रीय चढ़ाव ने ऋणियों की ऋण चुकाने की क्षमता को बढ़ाया, जिससे बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में काफी सुधार

चार्ट 1: बैंक ऋण और बैंकों के निवेश
(मार्च के अंत के अनुसार)

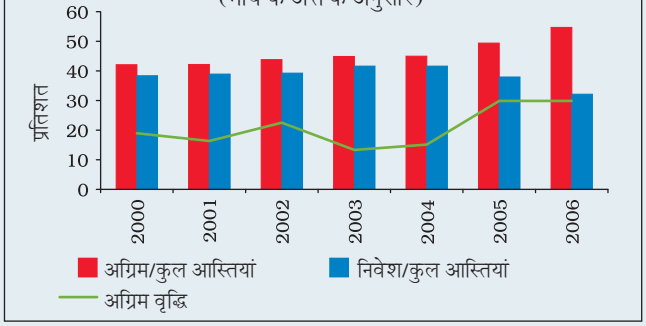

चार्ट 2: कुल ऋण में प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के अग्रिमों का हिस्सा
(मार्च के अंत के अनुसार)

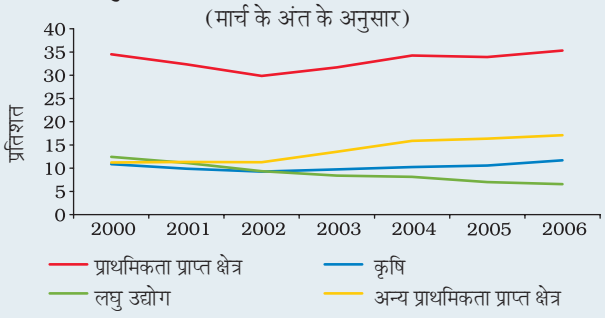

चार्ट 3: कुल ऋण में फुटकर ऋणों का हिस्सा
(मार्च के अंत के अनुसार)

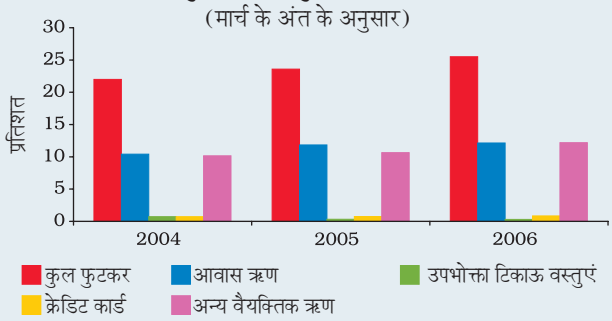

आया। हाल के वर्षों में ऋण में तेज वृद्धि के बावजूद, न केवल सकल अनर्जक ऋणों (एनपीएल) के अनुपातिक स्तर में कमी आई है, बल्कि सकल एनपीए के संपूर्ण स्तर में भी बहुत ज्यादा गिरावट आई। भारतीय बैंकों की आस्ति गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार के लिए अनेक कारकों ने योगदान दिया है। एक, बैंकों ने अपनी जोखिम प्रबंधन कार्य प्रणाली में धीरे- धीरे सुधार किया है तथा ऋण जोखिम का पता करने के लिए और कठोर प्रणाली तथा स्कोरिंग मॉडल की शुरुआत की है। दूसरे, हाल के वर्षों में अनुकूल समष्टि आर्थिक वातावरण का मतलब यह भी है कि कई कंपनियाँ और परंपरागत रूप से समस्याग्रस्त उद्योगों की इकाइयां अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं। तीसरे, फुटकर ऋणों, जिनमें चूक की दर कम रही है, पर अधिक फोकस के साथ ऋण आधार के विविधीकरण ने भी और अनुकूल ऋण जोखिम प्रोफाइल में योगदान किया है । चौथे, एनपीए की वसूली के लिए अनेक संस्थागत उपाय किए गए हैं। इनमें ऋण वसूली प्राधिकरण (डीआरटी), लोक अदालत (जनता की अदालत), आस्ति पुनर्निर्माण कंपनी (एआरसी) और कंपनी ऋण पुनर्गठन (सीडीआर) तंत्र शामिल हैं। विशेष रूप से, वित्तीय आस्ति प्रतिभूतिकरण और पुनर्गठन तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम ने बिना अदालतों के हस्तक्षेप के, प्रतिभूति के प्रवर्तन के लिए बैंकों को और वार्ता (समझौता) संबंधी शक्तियां प्रदान की हैं जिससे अशोध्य ऋणों को शोधित किया जा सके।

संदर्भ :

अन्तरराष्ट्रीय निपटान बैंक (2006),''द बैंकिंग सिस्टम इन इमर्जिंग इकनॉमीज: हाउ मच प्रोग्रेस हैज बीन मेड? बी आइ एस पेपर्स संख्या 28, अगस्त।''

डिजनकोव, सीमोन, कैरेली मैक्लीज और आद्रे शैलीफर (2005) ''प्राइवेट क्रेडिट इन 129 कंट्रीज'' एनबीईआर वर्किंग पेपर 11078 जनवरी।

अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (2004 ए) 'आर क्रेडिट बूम्स इन इमर्जिंग मार्केट्स ए कंसर्न?' वर्ल्ड इकनॉमिक आउटलुक, चैप्टर IV, अप्रैल, 147-65।

लीपिंग, ही एंड फैन गैंग (2002), 'कन्ज्यूमर फाइनैंस इन चाइनाट रिसेंट डेवलपमेंट ट्रेंडस', चाइना एंड वर्ल्ड इकोनॉमी, 6,12-17।

3.15 उपलब्ध अनंतिम आंकड़ों के आधार पर, फुटकर क्षेत्र को दिए गए बैंक ऋण में जून 2006 के अंत में (वर्ष दर वर्ष) में 47.2 प्रतिशत की बढोत्तरी हुई, तथा आवास ऋण 54.3 प्रतिशत बढ़ा। भूमि-भवन के लिए ऋण में 102.4 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर्ज हुई। कृषि और उद्योग को दिए गए ऋण की वृद्धि क्रमशः 36.8 प्रतिशत और 26.6 प्रतिशत थी।

प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को अग्रिम

3.16 प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को दिया गया ऋण पिछले वर्ष के 40.3 प्रतिशत की तुलना में 2005-06 में 33.7 प्रतिशत बढ़ा। कृषि और आवास क्षेत्र को सबसे ज्यादा ऋण मिला, जिसमें 2005-06 में दोनों का हिस्सा वृद्धिशील प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के दो-तिहाई से अधिक था। लघु क्षेत्र को दिए गए ऋणों में भी वृद्धि हुई (सारणी III.6)। 10 अगस्त 2005 को घोषित लघु और मध्यम उद्यमों (एसएमई) के लिए ऋण को बढ़ाने के नीतिगत पैकेज को लाकर, अन्य बातों के साथ-साथ, केंद्र सरकार और रिज़र्व बैंक द्वारा शुरू की गई अनेक अनुकूल नीतिगत पहलों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

सारणी III.5: खाद्येतर ऋण का क्षेत्रवार अभिनियोजन प्रवाह
(वर्ष में घट-बढ़)

(राशि करोड़ रु. में)

क्षेत्र	2004-05		2005-06	
	समग्र	प्रतिशत	समग्र	प्रतिशत
1	2	3	4	5
1. कृषि एवं संबंधित कार्य	**31,774**	**35.1**	**47,042**	**37.6**
2. उद्योग (लघु मझोले और बड़े)	**62,014**	**19.8**	**1,22,165**	**28.6**
जिसमें से : लघु उद्योग	8,051	12.2	15,651	21.0
3. वैयक्तिक ऋण	**–**	**–**	**1,08,697**	**44.4**
जिसमें से : आवास	–	–	57,701	44.8
4. अन्य सेवाएं	**94,281**	**29.0**	**1,27,454**	**62.9**
जिनमें से: थोक व्यापार	6,561	26.4	7,157	22.0
स्थावर संपदा	7,622	136.7	13,380	100.6
गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियां	2,501	14.9	8,458	37.6
कुल खाद्येतर सकल बैंक ऋण (1 से 4)	**1,88,069**	**25.8**	**4,05,358**	**40.5**
जिनमें से : प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र	1,06,235	40.3	1,28,434	33.7

– : उपलब्ध नहीं ।

टिप्पणी : 1. आंकड़े अनंतिम हैं और चयनित अनुसूचित वाणिज्य बैंकों से संबंधित हैं जो सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के बैंक ऋण का 90 प्रतिशत है।
2. क्षेत्रों के पुनर्वर्गीकरण एवं बैंकों के कार्यक्षेत्र विस्तार के कारण 2004-05 (47 बैंकों) के आंकड़े 2005-06 (52 बैंकों) से पूर्णतः तुलनीय नहीं हैं ।

सारणी III.6: प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण

(राशि करोड़ रुपए में)

श्रेणी	बकाया			
	21, मार्च 2003	19, मार्च 2004	18, मार्च 2005	31, मार्च 2006
1	2	3	4	5
प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र (क+ख+ग)	**2,11,609 (20.7)**	**2,63,834 (24.7)**	**3,81,476 (40.3)**	**5,09,910 (33.7)**
क) कृषि	73,518 (21.0)	90,541 (23.2)	1,25,250 (35.1)	1,72,292 (37.6)
ख)लघु उद्योग	60,394 (5.6)	65,855 (9.0)	74,588 (12.2)	90,239 (21.0)
ग) अन्य प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र	77,697 (35.6)	1,07,438 (38.3)	1,81,638 (61.8)	2,47,379 (36.2)

टिप्पणी : 1. कोष्ठकों के आंकड़े वार्षिक वृद्धि दर दर्शाते हैं।
2. क्षेत्रों के पुनर्वर्गीकरण एवं बैंकों के कार्यक्षेत्र विस्तार के कारण 2004-05 (47 बैंकों) के आंकड़े 2005-06 (52 बैंकों) से पूर्णतः तुलनीय नहीं हैं ।

3.17 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के बकाया अग्रिम 2005-06 के दौरान 33.7 प्रतिशत बढ़े। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने मार्च 2006 के अंतिम रिपोर्टिंग शुक्रवार तक एक समूह के रूप में, प्राथमिक क्षेत्र के निवल बैंक ऋण (एनबीसी) का 40.0 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त कर लिया तथापि, कृषि क्षेत्र और कमजोर वर्ग को निवल बैंक ऋण का क्रमशः 18.0 प्रतिशत और 10.0 प्रतिशत का उप-लक्ष्य पूरा नहीं किया गया (सारणी III.7 और परिशिष्ट सारणी III.5)। अलग-अलग बैंक स्तर पर, सभी राष्ट्रीयकृत बैंक और स्टेट बैंक समूह में दो को

सारणी III.7 : सरकारी और निजी क्षेत्र के बैंकों द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण
(मार्च के अंतिम सूचनाप्रदाता शुक्रवार को)

(राशि करोड़ रुपए में)

मद	सरकारी क्षेत्र के बैंक		निजी क्षेत्र के बैंक	
	2005	2006@	2005	2006@
1	2	3	4	5
प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र अग्रिम	**3,07,046 (42.8)**	**4,10,379 (40.3)**	**69,886 (43.6)**	**1,06,566 (42.8)**
जिसमें से :				
कृषि	1,09,917 (15.3)	1,54,900 (15.2)	21,636 (13.5)	36,185 (13.5)
लघु उद्योग	67,800 (9.5)	82,492 (8.1)	8,592 (5.4)	10,447 (4.2)
अन्य प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र	1,25,114 (17.4)	1,64,473 (16.2)	38,797 (24.2)	58,243 (23.4)

@: अनंतिम

टिप्पणी : 1. कोष्ठकों के आंकड़े संबंधित समूहों के लिए निवल बैंक ऋण के प्रतिशत दर्शाते हैं।
2. कृषि के प्रतिशत के लिए निवल बैंक ऋण के 4.5 प्रतिशत अप्रत्यक्ष कृषि की गणना की गई है ।

छोड़कर (भारतीय स्टेट बैंक और स्टेट बैंक ऑफ पटियाला) सभी ने निवल बैंक ऋण के 40 प्रतिशत के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के लक्ष्य को पूरा किया। लेकिन सार्वजनिक क्षेत्र के केवल ग्यारह बैंक (इलाहाबाद बैंक, आंध्रा बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, इंडियन बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक,भारतीय औद्योगिक विकास बैंक लि, पंजाब नैशनल बैंक, सिंडिकेट बैंक, स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर, स्टेट बैंक ऑफ इंदौर और स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र) कृषि के उप-लक्ष्य को प्राप्त कर सके, जबकि कमजोर वर्गों के उप-लक्ष्य को सार्वजनिक क्षेत्र के केवल आठ बैंक (इलाहाबाद बैंक,आंध्रा बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, इंडियन बैंक,इंडियन ओवरसीज बैंक, पंजाब नैशनल बैंक,सिंडिकेट बैंक तथा स्टेट बैंक ऑफ पटियाला) पूरा कर सके।

3.18 2005-06 के दौरान निजी क्षेत्र के बैंकों द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को दिए गए कुल अग्रिम तेजी से 52.5 प्रतिशत बढ़े। मार्च 2006 के अंतिम रिपोर्टिंग शुक्रवार को निजी क्षेत्र के बैंकों द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को दिए गए ऋण निवल बैंक ऋण के 42.8 प्रतिशत थे - जो लक्ष्य से ऊपर थे (सारणी 7)। जबकि 2005-06 में निजी क्षेत्र के बैंकों द्वारा कृषि को दिए गए अग्रिमों में 67.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जहाँ तक एनबीसी का संबंध है, यह 18 प्रतिशत के उप-लक्ष्य से अब भी कम रहा। एक को छोड़कर (गणेश बैंक ऑफ कुरुंडवाड) निजी क्षेत्र का कोई भी बैंक कृषि और कमजोर वर्गों के उप-लक्ष्य को पूरा नहीं कर सका। 2005-06 के दौरान 'अन्य प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र' को दिए गए ऋण 50.1 प्रतिशत तथा लघु उद्योग क्षेत्र को 21.6 प्रतिशत बढ़े। निजी क्षेत्र के बैंकों के मामलें में, 'अन्य प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र' का हिस्सा निवल बैंक ऋण के 36.4 प्रतिशत पर सर्वाधिक था, इसके पश्चात कृषि और लघु उद्योगों का दिए गए अग्रिमों का स्थान था (परिशिष्ट सारणी III.6 और III.7)।

3.19 मार्च 2006 के अंतिम रिपोर्टिंग शुक्रवार को विदेशी बैंकों द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को दिए गए उधार निवल बैंक ऋण के 34.6 प्रतिशत थे, जो 32 प्रतिशत के निर्धारित लक्ष्य से ऊपर थे। कुल निवल बैंक ऋण में 19.4 प्रतिशत का निर्यात ऋण का हिस्सा 12.0 प्रतिशत के निर्धारित उप-लक्ष्य से काफी ऊपर था। लेकिन, विदेशी बैंक लघु उद्योग को उधार देने के संबंध में 10.0 प्रतिशत के उप-लक्ष्य से थोड़ा पीछे रहे (सारणी III.8)।

विशेष कृषि ऋण योजनाएं

3.20 रिज़र्व बैंक ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को 1994 में सलाह दी थी कि वे वार्षिक आधार पर विशेष कृषि ऋण योजनाएं बनाएं। निजी क्षेत्र के बैंकों के लिए विशेष कृषि ऋण योजना 2005-06 से लागू की गई, जैसा कि कृषि के लिए ऋण प्रवाह और बैंकिंग प्रणाली से संबद्ध गतिविधियों पर बनी सलाहकार समिति द्वारा सिफारिश की गई थी (अध्यक्ष : प्रो. वी.एस.व्यास, और जिसे 2004-05 की वार्षिक नीति की मध्यावधि समीक्षा में घोषित किया गया था। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को सलाह दी गई कि वे लघु और सीमांत कृषकों को एसएसीपी के अंतर्गत दिए जाने वाले अपने अग्रिमों के संवितरण को मार्च 2007 तक बढ़ाकर 40.0 प्रतिशत कर दें। 2005-06 के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा एसएसीपी के अंतर्गत कृषि के लिए कुल संवितरण 94,278 करोड़ रुपए था ,जो 85,024 करोड़ रुपए के लक्ष्य और 2004-05 के दौरान 65,218 करोड़ रुपए के संवितरण से काफी अधिक था। 2005-06 के दौरान निजी क्षेत्र के बैंकों का 31,119 करोड़ रुपए (अनंतिम) का संवितरण 24,222 करोड़ रुपए के लक्ष्य से अधिक कम था।

3.21 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को सलाह दी गई कि वे अपने निवल बैंक ऋण का 5.0 प्रतिशत महिलाओं के लिए निर्धारित करें। मार्च 2006 के अंत में, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा महिलाओं को

सारणी III.8: विदेशी बैंकों द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण

(मार्च के अंतिम सूचनाप्रदाता शुक्रवार को)

(राशि रुपए करोड़ में)

क्षेत्र	2004		2005		2006@	
	राशि	निवल बैंक ऋण में प्रतिशत	राशि	निवल बैंक ऋण में प्रतिशत	राशि	निवल बैंक ऋण में प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7
प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र अग्रिम #	**17,960**	**34.1**	**23,843**	**35.3**	**30,449**	**34.6**
जिनमें से :						
निर्यात ऋण	9,760	18.5	12,339	18.3	17,102	19.4
लघु उद्योग	5,307	10.1	6,907	10.2	8,446	9.6

@ : अनंतिम

: इनमें इंडस्ट्रीयल इस्टेट प्रस्थापित करने के लिए दिए गए अग्रिम, सॉफ्टवेयर उद्योगों, खाद्यान्न और एग्रो-प्रोसेसिंग क्षेत्र, स्वयं सहायता समूह और वेंचर पूंजी के लिए, ऋण शामिल है।

दिया गया कुल ऋण उनके निवल ऋण का 5.37 प्रतिशत था तथा इस प्रकार जिसमें 22 बैंकों ने लक्ष्य प्राप्त कर लिया था। खादी और ग्रामोद्योग आयोग को ऋण प्रदान करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के चुनिंदा बैंकों का एक सहायता संघ बनाया गया जिसमें भारतीय स्टेट बैंक को सहायता संघ अध्यक्ष बनाया गया। ये ऋण सहायता संघ के पांच बड़े बैंकों के औसत मूल उधार दर के 1.5 प्रतिशत से कम पर दिए जाते हैं। योजना के अंतर्गत सहायता संघ द्वारा संवितरित किए गए 738 करोड़ रुपए में से जुलाई 2006 के अंत में 322 करोड़ रुपए की राशि बकाया थी।

लघु वित्त

3.22 रिज़र्व बैंक ऋण वितरण को सुदृढ़ करने, ग्राहक सेवा सुधारने और आबादी के सभी वर्गों को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए बैंकों को प्रोत्साहित करने के प्रयास लगातार करता रहा है। भारत में बैंकिंग प्रणाली के काफी विस्तार के बावजूद, देश की जनसंख्या के एक बहुत बड़े हिस्से की बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच नहीं है। इसलिए बैंकिंग सेवाओं को दूर दूर तक पहुंचाने के लिए हाल के वर्षों में भारत सरकार की नीति और रिज़र्व बैंक द्वारा प्रमुख रूप से जोर दिया गया। स्वयं सहायता समूह, जिनका ऋण लिंकेज बैंकों के साथ है, की संचयी संख्या 31 मार्च 2005 को 1.62 मिलियन बढ़कर से 31 मार्च 2006 को 2.24 मिलियन हो गई। मार्च 2006 के अंत में दौरान बैंकों द्वारा दिए गए ऋण 65.2 प्रतिशत से बढ़कर 11,398 करोड़ रुपए हो गए। इस प्रकार स्वयं सहायता समूहों से लाभ उठाने वाले गरीब परिवारों की संख्या 31 मार्च 2006 को 35.4 प्रतिशत बढ़कर 32.9 मिलियन हो गई (देखें अध्याय-IV)

उद्योग क्षेत्र को ऋण

3.23 2005-06 में उद्योग (लघु, मध्यम और बड़े) के लिए ऋण में पिछले वर्ष की तुलना में उच्च वृद्धि दिखी। लेकिन, खाद्येतर सकल बैंक ऋण में उद्योग के बकाया ऋण मार्च 2005 के 42.7 प्रतिशत से कम होकर मार्च 2006 में 39.1 प्रतिशत हो गए जो समग्र ऋण में अधिक वृद्धि के कारण थे। उद्योग को दिए गए कुल वृद्धिशील बैंक ऋण में इन्फ्रास्ट्रक्चर का सबसे बड़ा हिस्सा (24.4 प्रतिशत) था, इसके पश्चात् मूल धातु और धातु उत्पाद (14.1 प्रतिशत) तथा वस्त्र (11.2 प्रतिशत) थे (परिशिष्ट सारणी III.8) । विद्युत (इन्फ्रास्ट्रक्चर ढांचे के अंतर्गत) और लोहा तथा स्टील (धातु और धातु उत्पाद उद्योग के अंतर्गत) का हिस्सा सबसे बड़ा था। अन्य बड़े उद्योग, जिनमें बैंक ऋण का प्रवाह बढ़ा था - वस्त्र, रसायन पेट्रोलियम, वाहन, खाद्य प्रसंस्करण, निर्माण, रत्न और आभूषण तथा अभियांत्रिकी थे (चार्ट III.5) ।

चार्ट III.5: सकल बैंक ऋण का उद्योगवार अभिनियोजन

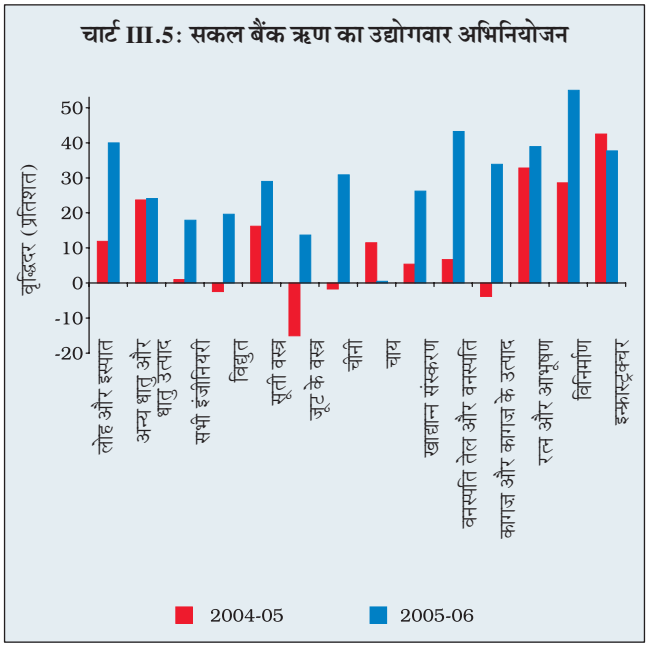

फुटकर ऋण

3.24 हाल के वर्षों में सुदृढ़ वृद्धि जारी रखते हुए, 2005-06 में फुटकर अग्रिम 40.9 प्रतिशत बढ़कर 3,75,742 करोड़ रुपए हो गए जो 31.0 प्रतिशत के समग्र ऋण वृद्धि की तुलना में काफी अधिक थे। परिणामस्वरूप, वर्ष के दौरान कुल ऋण और अग्रिम में उनका हिस्सा बढ़ा। ऑटो मोबाइल क्षेत्र को दिए गए ऋण में सर्वाधिक वृद्धि हुई, इसके पश्चात् क्रेडिट कार्ड प्राप्तियां, अन्य वैयक्तिक ऋण (इसमें मुख्य रूप से प्रोफेशनल्स और शैक्षिक प्रयोजन के लिए दिए गए ऋण शामिल हैं) तथा आवास वित्त का स्थान रहा। उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं के लिए दिए गए ऋणों में, पिछले वर्ष की 39.1 प्रतिशत की गिरावट की तुलना में 17.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई (सारणी III.9)।

सारणी III.9: बैंकों का खुदरा पोर्टफोलियो

(राशि करोड़ रु. में)

मद	मार्च के अंत में बकाया		घट-बढ़ प्रतिशत
	2005	2006	
1	2	3	4
1. आवास ऋण	1,34,276	1,79,116	33.4
2. उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	3,810	4,469	17.3
3. क्रेडिट कार्ड की प्राप्त राशियां	8,405	12,434	47.9
4. ऑटो ऋण	35,043	61,369	75.1
5. अन्य निजी ऋण	85,077	1,18,351	39.1
कुल खुदरा ऋण (1+2+3+4+5)	**2,66,610 (23.7)**	**3,75,739 (25.5)**	**40.9**
अनु. वाणिज्य बैंकों के कुल ऋण और अग्रिम	**11,25,056**	**14,73,723**	**31.0**

टिप्पणी : कोष्ठकों के आंकड़े कुल ऋण और अग्रिमों में प्रतिशत अंश का दर्शाते है।
स्रोत : परोक्ष विवरणियां।

सारणी III.10 : अनुसूचित वाणिज्य बैंकों द्वारा संवेदनशील क्षेत्रों को ऋण

(मार्च केअंत में)

(राशि करोड़ रुपए में)

क्षेत्र	2005	कुल का प्रतिशत	2006	कुल का प्रतिशत
1	2	3	4	5
1. पूंजी बाजार	15,860 (265.80)	9.83	22,077 (39.2)	7.7
2. स्थावर संपदा	1,45,605 (820.71)	88.71	2,60,223 (81.78)	90.77
3. पण्य	2,366 (-74.69)	1.47	4,391 (85.56)	1.53
कुल (1+2+3)	**1,63,831 (452.06)**	**100.0**	**2,86,691 (77.65)**	**100.0**

टिप्पणी : कोष्ठकों के आंकड़े पिछले वर्ष की तुलना में प्रतिशत अंतर दर्शाते हैं।

संवेदनशील क्षेत्र को उधार

3.25 2005-06 के दौरान अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा संवदेनशील क्षेत्रों (पूंजी बाजार, भूमि- भवन और पण्य) को दिए गए उधार,मुख्य रूप से भूमि भवन बाजार में ऋण -जोखिम में तीव्र वृद्धि के कारण, तेजी से बढे (सारणी III.10) । संवेदनशील क्षेत्र में अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का कुल ऋण- जोखिम कुल बैंक ऋण और अग्रिमों (जिसमें भूमि भवन को 17.2 प्रतिशत, पण्य क्षेत्र को पूंजी बाजार को 1.5 प्रतिशत और 0.3 प्रतिशत) का 18.9 प्रतिशत था।

3.26 बैंक समूहों के बीच, नए निजी क्षेत्र के बैंकों का संवेदनशील क्षेत्र में ऋण- जोखिम (बैंकों के कुल ऋणों और अग्रिमों के प्रतिशत से तुलना करने पर) सर्वाधिक था, मुख्य रूप से भूमि- भवन बाजार में ऋण -जोखिम में वृद्धि के कारण। इसके पश्चात् विदेशी बैंक, पुराने निजी क्षेत्र के बैंक और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का स्थान था (सारणी III.11 और परिशिष्ट सारणी III.10)।

निवेश

3.27 बैंकों के निवेश मोटे तौर पर दो वर्गों में विभाजित हैं, अर्थात् एसएलआर निवेश (इसमें ऐसी सरकारी और अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां शामिल हैं, जिनकी सांविधिक चलनिधि अनुपात को बनाए रखने के लिए गणना की जाती है) और गैर -एसएलआर निवेश (जिसमें गैर सरकारी उपक्रमों द्वारा निर्गत वाणिज्यिक पत्र, शेयर्स, बांड और डिबेंचर शामिल हैं)। बैंकों के निवेश का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा एसएलआर प्रतिभूतियों में है। 2005-06 के दौरान, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का समग्र निवेश, पिछले वर्ष के 8.1 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में थोड़ा सा अर्थात 0.3 प्रतिशत गिरा,जो एसएलआर निवेश में गिरावट के कारण था।

3.28 अक्तूबर 1997 से बैंकों से अपेक्षा है कि वे सरकारी और अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवल मांग और मीयादी देयताओं का 25 प्रतिशत सांविधिक चलनिधि अनुपात (एसएलआर) के रूप में रखें। लेकिन, 1990 के दशक के मध्य से अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक सांविधिक आवश्यकता से अधिक सरकारी और अन्य अनुमोदित प्रतिभूतिों में निवेश कर रहे हैं। ऐसे निवेश 16 अप्रैल 2004 को एनडीटीएल के 42.7 प्रतिशत पर पहुंच गए, जो अब तक सबसे अधिक थे। लेकिन, ऋण की बढ़ी हुई मांग को ध्यान में रखते हुए, बैंक पिछले दो वर्षों में धीरे-धीरे अपने एसएलआर पोर्टफोलियो का पुनर्समायोजन कर रहे हैं (बॉक्स III.5)। 1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद पहली बार, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का एसएलआर प्रतिभूतियों में समग्र निवेश 2004-05 में 61,566 करोड़ रुपए की वृद्धि के विपरीत, 2005-06 में 21,699 करोड़ रुपए गिर गया (चार्ट III.6)।

एसएलआर से भिन्न निवेश

3.29 पिछले वर्ष के 4.1 प्रतिशत (5700 करोड़ रुपए) की वृद्धि से तुलना करने पर एसएलआर से भिन्न प्रतिभूतियों में बैंक निवेश

सारणी III.11 : संवेदनशील क्षेत्र को ऋण-बैंक समूहवार*

(प्रतिशत)

क्षेत्र	सरकारी क्षेत्र के बैंक		निजी क्षेत्र के नए बैंक		निजी क्षेत्र के पुराने बैंक		विदेशी बैंक	
	2004-05	2005-06	2004-05	2005-06	2004-05	2005-06	2004-05	2005-06
1	2	3	4	5	6	7	8	9
पूंजी बाजार#	1.1	1.2	2.2	2.3	1.1	1.3	3.1	2.3
स्थावर संपदा@	9.1	14.2	28.4	28.8	12.7	14.5	21.5	25.6
पण्य	0.1	0.1	0.7	1.3	0.1	0.2	0.0	0.0
संवेदनशील क्षेत्र को कुल अग्रिम	**10.3**	**15.5**	**31.3**	**32.4**	**14.0**	**16.0**	**24.6**	**27.9**

* : संबंधित बैंक समूह के कुल ऋण और अग्रिमों के प्रतिशत के रूप में संवेदनशील क्षेत्र को दिए गए ऋण।
\# : पूंजी बाजार के ऋण जोखिम में निवेश तथा अग्रिम दोनों शामिल है ।
@ : स्थावर संपदा के ऋण जोखिम में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों ऋण शामिल हैं ।

बॉक्स III.4: बैंकों के निवेश पोर्टफोलियो में परिवर्तन

बैंकों से अपेक्षा है कि वे बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 के अनुसार, सरकारी और अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में अपनी निवल मांग और मीयादी देयताओं के निर्धारित न्यूनतम तक निवेश करें। वित्तीय क्षेत्र के सुधारों के रूप में, बैंकों की एसएलआर आवश्यकता को धीरे- धीरे घटाकर फरवरी 1992 में 38.5 प्रतिशत के अधिकतम से अक्तूबर 1997 में 25 प्रतिशत किया गया। तथापि, एसएलआर संबंधी अपेक्षाओ में काफी बड़ी कमी के पश्चात् भी, बैंकों ने 1998-99 से 2002-03 की अवधि के दौरान निवल मांग और मीयादी देयताओं का 37.3 प्रतिशत औसत एसएलआर निवेश के रूप में रखा। औद्योगिक क्षेत्र, जो पुनर्निर्माण के दौर से गुजर रहा था, में मंदी के कारण ऋण की घटी मांग ने बैंकों को सरकारी प्रतिभूतियों में अपनी निधियों का निवेश करने के लिए विवश किया। ब्याज दर के घटते परिदृश्य में, बैंकों के लिए ऐसे निवेश अधिक आय के कारण विशेष रूप से आकर्षक बन गए। संयोगवश, ऋण की कम मांग की अवधि उस अवधि के समकालीन है, जब बैंक अपनी पूंजी के स्तर को बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे और एनपीए का स्तर घटा रहे थे। 1996 से पूंजी पर्याप्तता मानदंड लागू करने से, जब बैंकों को अपनी जोखिम भारित संपत्ति का 8 प्रतिशत पूंजी के रूप में रखने की आवश्यकता थी और एनपीए स्तर को कम करने के लिए दबाव था, बैंकों में जोखिम के प्रति थोड़ी सी अरुचि बढ़ी । इस प्रकार सरकारी और अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश, जिसमें जोखिम भार शून्य था, बैंकों के लिए निवेश हेतु पसंद बन गया।

1998-99 से 2002-03 की अवधि के पश्चात उच्च आर्थिक वृद्धि और ऋण की अधिक मांग की अवधि आई। 2003-04 से बैंकों को अन्य बचत लिखतों से बढ़ी हुई प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा और कुल जमा, मुख्य रूप से सावधि जमाओं के कारण, 2003-04 के 16.4 प्रतिशत से गिरकर 2004-05 में 15.4 प्रतिशत पर आ गई। इस अवधि में, सरकारी आय काफी कम हो गई। इन कारकों को एक साथ मिलाने पर उल्लेखनीय समायोजन हुआ क्योंकि उन बैंकों में निवेश पोर्टफोलियों में प्रयास किया गया कि सरकारी प्रतिभूतियों (2004-05) में नए निवेश को रोककर ऋण की बढ़ी हुई मांग को पूरा किया जाए और इसके बाद सरकारी प्रतिभूतियों (2005-06) को बेच दिया गया। गैर एसएलआर निवेशों के संबंध में कमोबेश यही रुझान पाया गया। यद्यपि बैंकों की पूंजी बाजार में अधिक पहुंच, और जमा से इतर संसाधनों का सहारा लेने से दबाव कम तो हुआ, लेकिन ऐसा कुछ सीमा तक ही हुआ (चार्ट I)।

चार्ट 1: अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के ऋण, निवेश और जमाराशियां

(वार्षिक उपचय)

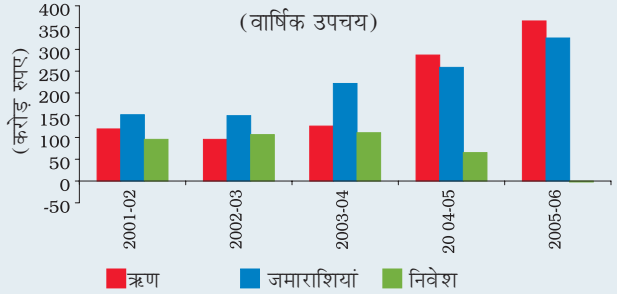

संदर्भ :

नवंबर 2005 में प्रकाशित भारिबैं.बुलेटिन उदारीकरण की अवधि के बाद में निजी कंपनी क्षेत्र का निष्पादन

रामाशास्त्री, ए.एस. और एन के उन्नीकृष्णन (2006), 'इज द रोल ऑफ बैंक्स ऐज फायनेंशियल इंटरमीडियरीज डिक्रीजिंग? ए हेली कॉप्टर टूर', इकनॉमिक और पॉलिटिकल वीकली, वाल्यू XLI सं.11, मार्च

9.4 प्रतिशत (13,824 करोड़ रुपए) गिरे (सारणी III.12)। जबकि बाँडों/डिबेंचरों में निवेश तेजी से गिरे, वहीं शेयरों और वाणिज्यिक पत्रों में निवेश बढ़े। एसएलआर निवेश से भिन्न निवेशों सहित, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों से वाणिज्यिक क्षेत्रों के लिए निधियों के

चार्ट III.6: एसएलआर प्रतिभूतियों में अनुसूचित वाणिज्य बैंकों द्वारा निवेश

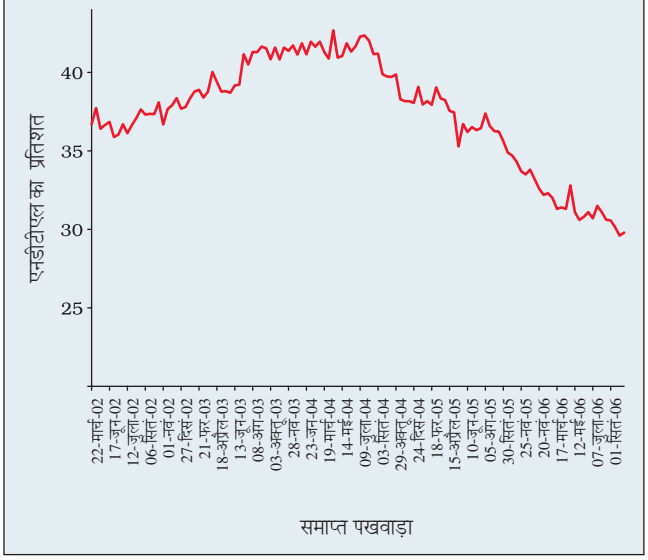

सारणी III.12: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के गैर सांविधिक चलनिधि अनुपात निवेश

(राशि करोड़ रुपए में)

क्षेत्र	18, मार्च 2005	कुल का प्रतिशत	17, मार्च 2006	कुल का प्रतिशत
1	2	3	4	5
1. वाणिज्यिक पत्र	3,944	2.7	4,166	3.1
2. शेयरों में निवेश	13,795	9.4	15,496	11.7
जिनमें से :				
क) सरकारी क्षेत्र के उपक्रम	1,886	1.3	2,274	1.7
ख) निजी कंपनी क्षेत्र	10,289	7.0	10,501	7.9
3. बांडों/डिबेंचरों में निवेश	1,15,894	79.2	1,05,452	79.6
जिनमें से :				
क) सरकारी क्षेत्र के उपक्रम	46,939	32.1	33,724	25.4
ख) निजी कंपनी क्षेत्र	31,994	21.9	31,236	23.6
4. भारतीय यूनिट ट्रस्ट तथा अन्य म्युच्युटल फंड	12,744	8.7	7,439	5.6
कुल-गैर सांविधिक चलनिधि अनुपात निवेश (1+2+3+4)	**1,46,377**	**100.0**	**1,32,553**	**100.0**

टिप्पणी : आंकड़े आरआरबी को छोड़ कर हैं।

स्रोत : अनु.वा.बैंको द्वारा प्रस्तुत धारा 42(2) विवरणियां ।

सारणी III.13: गैर सांविधिक चलनिधि अनुपात निवेश की संरचना

(प्रतिशत)

	2000-01	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
1	2	3	4	5	6	7
वाणिज्यिक पत्र	7.3	7.2	3.1	2.7	2.7	3.1
बांड/डिबेंचर	80.3	81.7	84.2	81.5	79.2	79.6
शेयर	6.0	6.6	7.9	7.3	9.4	11.7
भारतीय यूनिट ट्रस्ट तथा मुच्युअल फंड	6.3	4.5	4.9	8.5	8.7	5.6

टिप्पणी : आंकड़े आरआरबी को छोड़ कर हैं।
स्रोत : अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा प्रस्तुत धारा 42(2) विविरणियां।

कुल प्रवाह में पिछले वर्ष के 29.0 प्रतिशत (2,59,259 करोड़ रुपए) की तुलना में 28.3 प्रतिशत (3,40,573 करोड़ रुपए) की वृद्धि हुई ।

3.30 एसएलआर पोर्टफोलियों का एक हिस्सा बैंक ऋण की अधिक मांग को निधीकृत करने के लिए भी प्रयोग किया गया। एसएलआर पोर्टफोलियों से भिन्न बड़े शीर्ष में, निश्चित आय लिखत जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के बांड और डिबेंचर और म्यूचुअल फंडों की यूनिटों में कमी उल्लेखनीय थी। तथापि, शेयरों में निवेश काफी बढ़ा। गैर एसएलआर निवेशों की संरचना में यह परिलक्षित हुआ (सारणी III.13)।

बैंकिंग प्रणाली की अंतरराष्ट्रीय आस्तियां

3.31 ऋण की बढ़ी हुई मांग निवासियों के लिए उच्च विदेशी मुद्रा ऋण की वृद्धि तथा निवासियों द्वारा अनिवासियों पर आहरित बकाया निर्यात बिल के रूप में भी परिलक्षित हुई। कुल अंतरराष्ट्रीय आस्तियों में नोस्ट्रो शेषों का हिस्सा 2004-05 के दौरान 7.1 प्रतिशत अंक की गिरावट से तुलना करने पर 2005-06 में 1.3 प्रतिशत अंक बढ़ा (सारणी III.14)।

3.32 बैंकों के समेकित अंतरराष्ट्रीय दावे 2004-05 के दौरान 5.0 प्रतिशत की गिरावट के विपरीत 2005-06 के दौरान 24.9

सारणी III.14: बैंकों की अंतरराष्ट्रीय परिसंपत्तियां-प्रकारानुसार

(मार्च के अंत में)(राशि करोड़ रुपए में)

परिसंपत्ति	2004	2005	2006
1	2	3	4
अंतरराष्ट्रीय आस्तियां (1+2+3)	**1,15,765**	**1,33,237**	**1,58,201**
1. ऋण और जमाराशियां	1,08,527	1,24,582	1,46,014
जिनमें से :	(93.7)	(93.5)	(92.3)
क) अनिवासियों को ऋण *	4,281	4,103	6,270
	(3.7)	(3.1)	(4.0)
ख) निवासियों को विदेशी मुद्रा ऋण **	44,079	58,092	63,231
	(38.1)	(43.6)	(40.0)
ग) निवासियों द्वारा अनिवासियों पर आहरित बकाया निर्यात ऋण	20,609	26,171	31,556
	(17.8)	(19.6)	(19.9)
घ) *नास्त्रो* शेष@	39,282	35,673	44,515
	(33.9)	(26.8)	(28.1)
2. ऋण प्रतिभूतियों की धारिता	858	979	2,079
	(0.7)	(0.7)	(1.3)
3. अन्य आस्तियां@@	6,380	7,676	10,109
	(5.5)	(5.8)	(6.4)

* : अनिवासियों की जमाराशियों में से रुपया ऋण और विदेशी मुद्रा ऋण सहित।
** : विदेशी मुद्रा में पोतलदानोत्तर ऋण, विदेश के प्लेसमेंट एवं बैंकों को विदेशी मुद्रा ऋण और बैंकों के पास विदेशी मुद्रा जमाराशियों सहित।
@ : विदेशी मुद्रा अनिवासी (बी) जमाराशियां अनिवासी बैंकों के पास रखी मीयादी जमाराशियों में शेष सहित।
@@ : भारतीय बैंकों की शाखाओं/सहायक संस्थाओं को आपूर्ति की गई पूंजी और उनसे प्राप्य लाभ और अन्य अवर्गीकृत अंतर्राष्ट्रीय परिसंपत्तियां स्थानीकृत बैंकिंग सांख्यिकी पर आधारित
टिप्पणी : कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल का प्रतिशत दर्शाते हैं।
स्रोत : स्थानगत बैंकिंग सांख्यिकीय।

प्रतिशत बढ़े। पिछले वर्ष के दौरान रुझान को पलटते हुए 2005-06 के समेकित अंतरराष्ट्रीय दावों में अल्पकालिक दावों (एक वर्ष से कम शेष परिपक्वता) का हिस्सा घटा जबकि दीर्घकालिक दावों का हिस्सा कमोबेश समान रूप से बढ़ा ।

3.33 बैंकों के अंतरराष्ट्रीय दावों के क्षेत्रवार वर्गीकरण ने कुल मिलाकर पिछले वर्ष के पैटर्न को दर्शाया है। रिपोर्टिंग बैंकों ने 'बैंकेतर निजी' क्षेत्र में सर्वाधिक राशि निवेश/उधार देने को वरीयता दी, इसके पश्चात बैंकिंग क्षेत्र ने (सारणी III.15)।

सारणी III.15: बैंकों के समेकित अंतरराष्ट्रीय दावों का वर्गीकरण परिपक्वता एवं क्षेत्रवार

(मार्च केअंत में)

(राशि करोड़ रुपए में)

अवशिष्ट परिपक्वता	2004	2005	2006
1	2	3	4
कुल समेकित अंतरराष्ट्रीय आस्तियां	**78,124**	**74,238**	**92,711**
(क) परिपक्वतावार			
1) अल्पावधि (अवशिष्ट परिपक्वता एक वर्ष से कम)	58,677 (75.1)	61,113 (82.3)	73,176 (78.9)
2) दीर्घावधि (अवशिष्ट परिपक्वता एक वर्ष तथा उससे अधिक)	17,820 (22.8)	11,951 (16.1)	18,627 (20.1)
3) अनाबंटित	1,627 (2.1)	1,174 (1.6)	907 (1.0)
(ख) क्षेत्रवार			
1) बैंक	43,057 (55.1)	34,301 (46.2)	43,050 (46.4)
2) बैंकेतर पब्लिक	1,520 (1.9)	1,145 (1.5)	1,248 (1.3)
3) बैंकेतर प्राइवेट	33,547 (42.9)	38,792 (52.3)	48,413 (52.2)

टिप्पणियां: 1. कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े कुल का प्रतिशत दर्शाते है।
2. अनाबंटित अवशिष्ट परिपक्वता में लागू नहीं परिपक्वता (अर्थात इक्विटी के लिए) और बैंक शाखाओं से उपलब्ध न करायी गई परिपक्वता सूचना शामिल है।
3. बैंकिंग क्षेत्र में सरकारी मौद्रिक संस्थाएं (जैसे आइएफसी, ईसीबी आदि और केंद्रीय बैंक शामिल हैं।
4. मार्च 2005 में समाप्त तिमाही से पूर्व बैंकेतर पब्लिक क्षेत्र में बैंकों को छोड़कर ऐसी कंपनियां/संस्थाएं शामिल थीं जिनमें राज्य / केंद्रीय सरकार और उनके विभागों सहित राज्य / केंद्रीय सरकारों की कम से कम 51 प्रतिशत शेयर धारिता थी। मार्च 2005 की तिमाही से बैंकेतर पब्लिक में केवल राज्य / केंद्रीय सरकार और उनके विभाग शामिल हैं तथा तद्नुसार बैंकों को छोड़कर अन्य सभी संस्थाओं को बैंकेतर प्राइवेट क्षेत्र में वर्गीकृत किया जा रहा है।

स्रोत : समेकित बैंकिंग सांख्यिकी पर आधारित - निकटवर्ती देश जोखिम आधार।

3.34 किसी देश के तात्कालिक जोखिम के आधार पर बैंकों के समेकित अंतरराष्ट्रीय दावों में वर्ष के दौरान कुछ परिवर्तन हुआ। जबकि अमरीका और हांगकांग के बैंकों के दावों में उल्लेखनीय गिरावट आई, इंग्लैण्ड के दावों में वृद्धि हुई। मार्च 2006 के अंत में, कुल समेकित अंतरराष्ट्रीय दावों में अमरीका, इंग्लैण्ड, हांगकांग, जर्मनी और सिंगापुर को मिलाकर 57.0 प्रतिशत हिस्सा था (सारणी III.16) ।

तिमाही प्रवृत्तियां : वाणिज्यिक बैंकिंग सर्वेक्षण [4]

3.35 2005-06 के दौरान सितंबर के अंत और मार्च के अंत में रिपोर्टिंग शुक्रवार 30 सितंबर 2005 और 31 मार्च 2006 को पड़ा (जो क्रमशः अर्ध-वार्षिक और वार्षिक लेखाबंदी का समकालिक है), दूसरी और चौथी तिमाही में अन्य तिमाहियों तथा पिछले वर्ष की तदनुरूपी तिमाहियों में जमाओं और कुल ऋणों में तेज वृद्धि दिखी।

3.36 2005-06 की पहली तिमाही के दौरान, ऋण में विस्तार नए जमाओं में वृद्धि से अधिक था जो मुख्य रूप से मांग जमाओं में भारी कमी के कारण था। इस अंतराल को भरने के लिए, बैंकों ने एसएलआर और एसएलआर से भिन्न निवेशों को बेच दिया। बैंकों ने विदेशी मुद्रा आस्तियों को भी बेच दिया। पूंजी खाते में तीव्र

सारणी III.16: भारत से इतर देशों पर बैंकों के समेकित अंतरराष्ट्रीय दावे

(मार्च केअंत में)

(राशि करोड़ रुपए में)

संकेतक	2004	2005	2006
1	2	3	4
कुल समेकित अंतरराष्ट्रीय दावे	**78,124**	**74,238**	**92,711**
जिनमें से :			
क) संयुक्त राष्ट्र अमेरीका	19,915 (25.5)	22,348 (30.1)	23,176 (25.0)
ख) यूनाइटेड किंगडम	9,879 (12.6)	7,608 (10.2)	14,212 (15.3)
ग) हांगकांग	12,353 (15.8)	7,389 (10.0)	6,652 (7.2)
घ) जर्मनी	4,593 (5.9)	3,607 (4.9)	4,678 (5.0)
ड) सिंगापुर	3,729 (4.8)	3,510 (4.7)	4,182 (4.5)

टिप्पणी : कोष्ठकों के आंकड़े कुल अंतरराष्ट्रीय दावों का प्रतिशत अंश हैं।
स्रोत : समेकित बैंकिंग सांख्यिकी - निकटवर्ती देश जोखिम आधार।

[4] बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 42(2) के अंतर्गत विवरणी से प्राप्त सूचना पर आधारित।

वृद्धि ने भी ऋण की बढ़ी हुई मांग को पूरा करने में बैंकों को सहायता की।

3.37 दूसरी तिमाही में, जमाओं में निवल वृद्धि और वाणिज्यिक क्षेत्र के ऋण में विस्तार भी काफी अधिक था। लेकिन, कुल जमाओं में निवल वृद्धि वाणिज्यिक क्षेत्र के ऋण से अधिक थी। इसलिए, बैंकों ने सरकारी प्रतिभूतियों में अपने निवेश बढ़ा दिए।

3.38 तीसरी तिमाही में, कुल जमाओं में वृद्धि और ऋण उठाव में तीव्र गिरावट हुई । लेकिन, वणिज्यिक क्षेत्र का ऋण कुल जमाओं में नई वृद्धि से लगभग चार गुना था। निधीयन के अंतर को पूरा करने के लिए बैंकों ने सरकारी प्रतिभूतियों के निवेश और एसएलआर से भिन्न निवेशों को बेच दिया।

3.39 चौथी तिमाही के दौरान, जबकि निवासियों की कुल जमाराशियों में तीव्र वृद्धि हुई, अप्रत्यावर्तनीय विदेशी मुद्रा जमाओं में गिरावट हुई। चौथी तिमाही के दौरान ऋण उठाव भी बढ़ा । लेकिन, बैंकों ने सरकारी और अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों के निवेशों को बेचा और एसएलआर से भिन्न अपने निवेशों को बढ़ाया तथा रिज़र्व बैंक के पास अपनी नकदी और शेषों को बढ़ाया (सारणी III.17 और परिशिष्ट सारणी III/11)।

सारणी III.17: अनुसूचित वाणिज्य बैंकों का परिचालन

(राशि करोड़ रुपए में)

Item	Outstanding at end-March 2006	घट-बढ									
		2004-05				2005-06				2006-07	
		ति.1	ति.2	ति.3	ति.4	ति.1	ति.2	ति.3	ति.4	ति.1	ति.2
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
घटक											
1. निवासियों की कुल जमाराशियां	20,49,773	57,050	21,232	38,447	78,251	7,145	1,29,596	13,065	1,90,983	30,677	1,57,233
क) मांग जमाराशियां	3,64,640	-12,155	2,277	15,280	17,604	-22,249	41,167	-3,430	63,135	-41,272	33,809
ख) निवासियों की मीयादी जमाराशियां	16,85,133	69,206	18,955	23,167	60,647	29,394	88,430	16,495	1,27,848	71,949	1,23,423
2. वित्तीय संस्थाओं से मांग/ मीयादी निधीयन	83,144	5,409	530	35,464	3,451	-1,002	7,359	1,836	3,031	3,118	-1,611
स्रोत											
1. सरकार को ऋण	7,00,742	40,056	-9546	-5,918	39,632	-1,457	18,324	-25,068	-11,314	23,238	6,904
2. वाणिज्य क्षेत्र को ऋण (क से घ)	16,63,499	32,884	40,538	1,08,835	79,929	12,862	1,04,416	53,032	1,72,011	22,606	1,38,787
क. बैंक ऋण	15,07,077	38,085	41,605	1,07,402	72,551	8,994	1,15,035	62,858	1,67,981	14,050	1,33,607
i) खाद्य ऋण	40,691	7,100	-4,872	5,590	-2,659	4,788	-5,255	1,464	-322	607	-7,840
ii) खाद्येतर ऋण	14,66,386	30,985	46,477	1,01,812	75,210	4,206	1,20,290	61,394	1,68,303	13,443	1,41,446
ख. प्राथमिक व्यापारियों को निवल ऋण	4,369	-678	977	-923	125	7,130	-2,759	1,128	-2,930	-1,963	2,916
ग. अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में निवेश	16,712	184	-561	-1,232	-680	-532	-10	-736	-2,017	526	4,642
घ. अन्य निवेश (गैर एसएलआर प्रतिभूतियों में)	1,35,340	-4,339	-1482	3,587	7,933	-2,730	-7,851	-10,218	8,961	9,993	-2,327
3. वाणिज्य बैंकों की निवल विदेशी मुद्रा आस्तिया	-45,616	-6,706	904	-3,172	-8,652	-2,057	-4,850	9,935	26,612	-21,137	11,679
क. विदेशी मुद्रा आस्तियां	43,494	-2,741	56	2,441	-8,051	-2,179	-1,044	11,169	6,114	-13,919	9,283
ख. अनिवासी विदेशी मुद्रा प्रत्यावर्तनीय सावधि जमाराशियां	59,275	953	-189	-654	692	804	187	1,856	-19,723	3,917	1,506
घ. समुद्रपारीय विदेशी मुद्रा उधार	29,834	3,012	-658	6,267	-90	-925	3,618	-622	-775	3,301	-3,903
4. निवल बैंक प्रारक्षित निधियां	1,38,619	10,392	-3,644	14,151	-1,267	3,060	9,679	-2,886	25,729	-6,090	20,455
5. पूंजी खाता	1,77,727	14,884	1,393	9,435	3,423	20,359	2,530	9,342	8,090	12,025	3,079

टिप्पणी : 1. आंकड़े अनंतिम हैं।
2. मीयादी जमाराशियों में 29 दिसंबर 2005 से इंडिया मिले नियम डिपॉजिट (आईएमडी) का शोधन प्रभाव शामिल है।
3. आंकड़े प्रत्येक तिमाही के अंतिम रिपोर्टिंग शुक्रवार से संबंधित हैं।

ऋण जमा अनुपात

3.40 2004-05 से बैंक ऋण वृद्धि की उच्च दर के परिणामस्वरूप ऋण-जमा अनुपात और निवेश-जमा अनुपात के स्वरूप में कुछ असामान्यता आई। वृद्धिशील ऋण-जमा अनुपात, जो 6 अगस्त 2004 तक वृद्धिशील निवेश-जमा अनुपात से कम था, इसके पश्चात तेजी से बढ़ा, जबकि वृद्धिशील निवेश-जमा अनुपात में गिरावट आई। 2005-06 में इस प्रवृत्ति पर बल दिया गया क्योंकि पूरे वर्ष भर ऋण-जमा अनुपात उल्लेखनीय रूप से निवेश-जमा अनुपात से अधिक रहा।

3.41 बड़े ऋण उठाव के कारण वृद्धिशील ऋण-जमा अनुपात पूरे वर्षभर सामान्यतया सौ प्रतिशत से ऊपर रहा। एसएलआर प्रतिभूतियों के निवेशों के मोचन के कारण, वृद्धिशील निवेश-जमा अनुपात 22.3 प्रतिशत से (-) 11.6 प्रतिशत की सीमा में रहा। ऋण-जमा और निवेश जमा अनुपात सामान्यतया नकारात्मक संबंधों को प्रस्तुत करते हैं ,जब वृद्धिशील ऋण-जमा अनुपात जुलाई 2005 में 111.8 प्रतिशत की ऊँचाई तक पहुँचकर नवंबर 2005 के मध्य में 96.0 प्रतिशत पर नीचे गिरा, वृद्धिशील निवेश-जमा अनुपात जुलाई 2005 में नकारात्मक हो गया और फिर नवंबर 2005 के मध्य तक 16.0 प्रतिशत की ऊँचाई तक गया। वृद्धिशील निवेश-जमा अनुपात पुन: 6 जनवरी 2006 को समाप्त पखवाड़े के दौरान नकारात्मक रहा। यह अनुपात 03 फरवरी 2006 तक सकारात्मक रहने के बाद पुनः नकारात्मक हो गया। जैसाकि आशा है ,कि अधिक ऋण की मांग के समय, बैंक सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करना पसंद करेंगे (चार्ट III.7)।

3.42 बकाया राशि पर आधारित ऋण-जमा और निवेश-जमा अनुपात, जो 1999 और 2004-05 की तीसरी तिमाही के बीच न्यूनाधिक

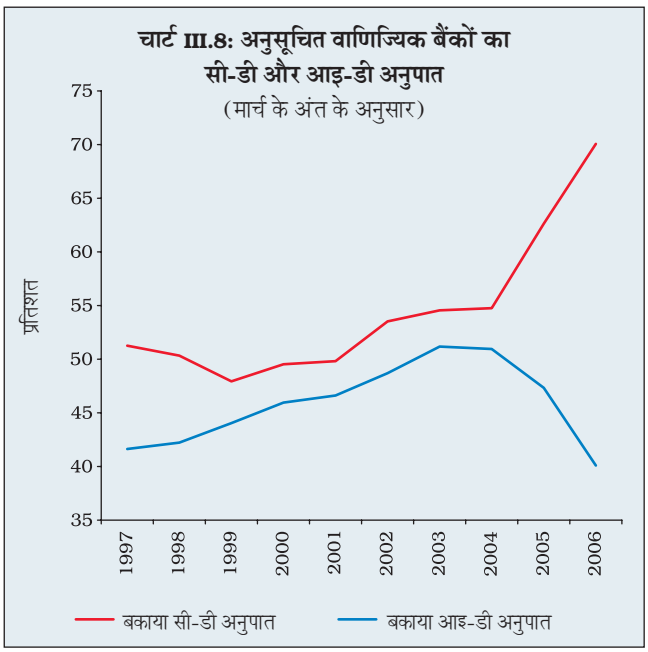

रूप से एक दिशा में आगे बढ़ा, इसके पश्चात विपरीत दिशा में चल पड़ा। मार्च के अंत में, ऋण-जमा अनुपात अब तक के सर्वाधिक 70.1 प्रतिशत पर रहा, जबकि निवेश-जमा अनुपात 40.1 प्रतिशत के निम्न स्तर तक गिरा (चार्ट III.8)।

3.43 बैंक समूहों के बीच, मार्च 2006 के अंत में विदेशी बैंकों का ऋण-जमा अनुपात सर्वाधिक था (बकाया राशि के संदर्भ में), इसके पश्चात नये निजी क्षेत्र के बैंक, पुराने निजी क्षेत्र के बैंक और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक थे (चार्ट III.9)।